# समाज विकास


अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जनवरी २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक १ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए


## अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रादेशिक सम्मेलनों के आगामी अधिवेशन

**आन्ध्र प्रदेश**
१९ फरवरी २००५
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक
✸
२० फरवरी २००५
१०वां अधिवेशन
✸
हैदराबाद

**पूर्वोत्तर**
१२वां अधिवेशन
✸
२५-२६ फरवरी २००५
✸
जोरहाट

**बिहार**
२४वां अधिवेशन
✸
५-६ मार्च २००५
✸
पटना सिटी

**झारखंड**
अध्यक्ष का निर्वाचन
✸
६ मार्च २००५
✸
रांची

सभी सदस्यों को सादर आमंत्रण

## लन्दन में सम्मेलन शाखा का प्रारम्भ
## ३० जनवरी २००५ से

विगत अगले अंक में

**उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत से सम्मेलन के शिष्टमंडल की भेंट**

बाएं से
सर्वश्री इन्दरचन्द संचेती,
लोकनाथ डोकानिया,
हरिप्रसाद कानोड़िया,
उपराष्ट्रपति श्री शेखावत,
नन्दकिशोर जालान,
सीताराम शर्मा,
रतन शाह
एवं
पवन जालान।

## लंदन में सम्मेलन की शाखा की स्थापना

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ब्रिटेन के लंदन शहर में विदेश शाखा खोली गयी।

प्रवासी मारवाड़ियों की सुविधा एवं कल्याण तथा अन्तर्राष्ट्रीय शहरों में सम्मेलन की स्थापना के विशेष प्रयास के मुख्य उद्देश्य से इसकी स्थापना की गयी है।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा उक्त शाखा के लिए निम्न पदाधिकारी मनोनीत किए गए हैं :—

अध्यक्ष, **डॉ. कृष्ण सरावगी**, उपाध्यक्ष, **श्री अशोक संचेती**, मंत्री, **श्री संजय अग्रवाल**

---

## चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने विभिन्न प्रांतों में बढ़ती क्षेत्रीयता एवं जातीयता की भावना से चिंतित होकर विभिन्न समुदायों के बीच साहित्यिक सम्बन्धों के माध्यम से संस्कृति सेतु का निर्माण करने एवं समरसता स्थापित करने के लिए उक्त पुरस्कार की स्थापना १९९८ में की थी। पश्चिम बंगाल सरकार की पश्चिम बंग बंगला अकादमी के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में सम्मेलन उन बंगाली साहित्यकारों को प्रेरित, प्रोत्साहित और पुरस्कृत करता है जो राजस्थान सम्बन्धी उत्तम साहित्य की बंगला में रचना करते हैं। स्थानीय भाषा के युवा रचनाकारों का भी उत्साहवर्द्धन करना इसके उद्देश्य में एक है।

पूर्व वर्षों में मेजर रामप्रसाद पोद्दार, मुम्बई, काया फाउन्डेशन, मारवाड़ी सम्मेलन फाउन्डेशन के सहयोग से ''चंदवरदायी पुरस्कार'', ''मीराबाई पुरस्कार'' एवं ''भरतव्यास पुरस्कार'' सात साहित्यकारों को दिए गए हैं। पुरस्कार स्वरूप साहित्यकारों को १० हजार १ रुपये की राशि एवं मान पत्र प्रदान किया जाता है।

आगामी चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा साहित्य **पुरस्कार समारोह पश्चिम बंग बंगला** अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में १२ फरवरी २००५, शनिवार को **संध्या ६ बजे बंगला अकादमी** सभागार, कोलकाता में आयोजित करने का कार्यक्रम है।

# इस अंक में


| | |
|---|---|
| अनुक्रमणिका | ३ |
| जनवाणी | ४ |
| अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान* | ५ |
| पारिवारिक, व्यावसायिक घरानों में बढ़ती कहल / *श्री सीताराम शर्मा* | ६-७ |
| कवितायें : नये वर्ष का नया संदेश / *श्री जगदीश प्रसाद तुलस्यान* | ७ |
| नव वर्ष की निर्मल कामना / *सुश्री रंजू मोदी* | ७ |
| सामाजिक सरोकार से जुड़कर अपनी पहचान बनाये / *श्री भानीराम सुरेका* | ८ |
| राजस्थान के इतिहास के जनक टॉड को विस्मृत न करें / *श्री गौरीशंकर कायां* | ९ |
| भारत में नारी का स्थान / *श्री बालकृष्ण गोयनका* | १०-११ |
| कविता : दोस्त मुबारक नया वर्ष हो / *सोहन लाल बांका* | ११ |
| सामाजिक संगठन की आवश्यकता क्यों / *श्री मुकुंद दास माहेश्वरी* | १२ |
| मानव हृदय में समाज सेवा का भाव / *श्री राम गोपाल सर्राफ* | १३ |
| कवितायें : सन् २००४ की लीलायें / डा. जगदीश लवानिया | १४ |
| सूनामी बनाम सूनामी / *श्री शिवकुमार लोहिया* | १४ |
| महाराणा प्रताप की स्मृति में कोलकाता की एक प्रमुख सड़क का नामकरण - एक रिपोर्ट | १५ |


# युग पथ चरण


- सम्मेलन का ७०वां स्थापना दिवस समारोह
- राष्ट्रीय पदाधिकारियों का तमिलनाडु व कर्नाटक दौरा
- राष्ट्रीय स्थायी समिति की बैठक की रपट
- सम्मेलन की राष्ट्रीय शिष्टमंडल की उपराष्ट्रपति से भेंट १६-३४
- इनके अतिरिक्त पूर्वोत्तर, बिहार, उत्कल, उत्तर प्रदेश प्रांतीय सम्मेलनों, महिला सम्मेलन, युवा मंच आदि सहित अन्यान्य संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की झांकियां।


## विशेष :

*अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक १९ फरवरी को सायं ६ बजे श्री जैन सेवा संघ, ३-५-१२१/डी, ईडन बाग, रामकोट, हैदराबाद ५०००८१ में आयोजित की जाएगी। आयोजन स्थल का फोन नं. : ०४०२४७५११८८ है।*


## समाज विकास

जनवरी, २००५

वर्ष ५५ ● अंक १

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.


## समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

***प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।***


***स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३११ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।***

***संपादक-मंडकिशोर जालान***

# ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

*- सम्पादक*

**सम्मेलन** के ७०वें स्थापना दिवस पर ढेर सारी बधाई एवं सफलता की कामना। मैं समझता हूं कि समाज के युवा वर्गों को समाज के हित के लिए आगे आना चाहिए। आज का युवा ही कल का कर्णधार होगा अत: मेरी उनसे करबद्ध प्रार्थना है कि वे अपने समाज के कर्मठ लोगों के जीवन को देखें, परखें तथा प्रेरणा लेकर कुछ ऐसा कर दिखाएं जिससे समाज में जो कुरीतियां फैली हुई हैं उससे मुक्ति मिल सके, समाज को नई दिशा में परिवर्तित करने के लिए तीव्र आंदोलन की जरूरत है।

**- लक्ष्मीनारायण शाह**
राउरकेला (उड़ीसा)

'समाज विकास' दिसम्बर अंक में अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान की कलम से आलेख 'नई बात क्यों कहें, नया हमने क्या सीखा, पढ़कर मन फड़क उठा। वैसे तो मैं पिछले दो-तीन साल से आपके आलेख बड़े गौर से पढ़ रहा हूं, उन पर चिन्तन भी कर रहा हूं, पर अब आप पूरी समसामयिक परिस्थितियों का सिंहावलोकन कर लिखते हैं हम अपनी आंखों के सामने समाज के अधोपतन को देख रहे हैं पर कुछ करने की स्थिति में स्वयं को नहीं पा रहे हैं। हमारा अंत:करण हमें धिक्कार रहा है। युवा अग्रिम पंक्ति में आये एवं प्रौढ़ मस्तिष्क उन्हें दिशा देकर आगे बढ़ने को प्रेरित करे, तो आपके विचार गहन अंधकार में आलोक किरण की तरह लगते हैं। प्रश्न यह है कि वह आलोक कौन प्रज्ज्वलित करे ? सम्मेलन की इस दिशा में पहल हो तभी हम कृतार्थ हो सकते हैं। अखिल भारतीय एवं प्रांतीय शाखा स्तर पर वैचारिक क्रांति का यह बिगुल बजे, प्रसुप्त और मदहोश युवा शक्ति मातृ शक्ति जागे तो अवश्य सफलता मिलेगी। आशा है आपके अध्यक्षीय काल में ही इसका श्री गणेश हो जाएगा। आपके पिछले प्रकाशित आलेखों को सम्यक् रूप से सम्पादित कर पुस्तकाकार में प्रकाशित करें तो बहुत अच्छा हो।

**- गोविन्द प्रसाद शर्मा,** सलकिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ७०वां स्थापना दिवस समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। मंच पर उपस्थित सभी व्यक्तियों ने समाज के उत्थान और समाज से कुरीतियां हटाने पर अपने-अपने विचार रखे। बड़े दु:ख की बात है कि जैसे-जैसे बुराइयां हटती हैं कुछ नई बुराइयां भी बढ़ती जाती हैं। सम्मेलन के कर्णधार सभापति तन-मन-धन से सम्मेलन के उत्थान में लगे हुए हैं। श्री नन्दकिशोर जालान ने तो अपना पूरा जीवन ही समर्पित कर दिया है। श्री मोहनलाल जी तुलस्यान की अध्यक्षता में हमारा समाज कुरीतियों से वंचित रहे मेरी यही हार्दिक इच्छा है।

**- परशुराम तोदी 'पारस',** हावड़ा

मेरे पास क्रमागत समाज विकास पत्रिका आ रही है। पढ़कर बहुत अच्छा लगता है। समाज के विषय में पूर्ण जानकारी मिल जाती है। यह एक सराहनीय कदम है। यह पत्रिका मारवाड़ी समाज के प्रत्येक घर में एक-एक जाना चाहिए।

**- सरला अग्रवाल,** बलांगीर

समाज विकास दिसम्बर अंक अवलोकन किया। सम्पादकीय में 'कितना बदल गया समाज' प्रेरक लगा। श्री सत्यनारायण सिंहानिया लिखित 'धार्मिक क्रियाकलपों में धन वैभव प्रदर्शन की अतिरेकता' एक प्रेरक व सीखने योग्य लेख लगा। व्यंग्य के रूप में हमारी नई संस्कृति भी संतोषजनक थी। वास्तव में ऐसा लगता है कि 'समाज विकास' पत्रिका समाज में व्याप्त प्राचीन रूढ़िवादी परम्पराओं को दूर करने में युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन देने में सफल होगी।

**- डॉ. प्रमोद अग्रवाल 'गोल्डी'**
प्रादेशिक उपाध्यक्ष, नैनीताल (उत्तरांचल)

आपका कृपा-पत्र तथा समाज विकास अक्टूबर ०४ अंक मिला। बड़ी खुशी हुई, धन्यवाद ! आपके द्वारा अभिव्यक्त विचार बहुत तर्क संगत तथा प्रत्येक दृष्टिकोण से स्वीकार्य है। हमारे देश के नेताओं की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् मानसिकता कितनी विकृत हो चुकी है। उनके स्वार्थ और कुर्सी हथियाने के लालच में निरीह जनता दिनों-दिन पिसती जा रही है, जिसका आज कोई विकल्प नजर नहीं आता। यही हमारी विवशतापूर्ण नियति है।

**- श्री बी.एन. मुदगिल,** रोहतक

समाज विकास प्राप्त होने का सुअवसर मिला। प्रति मास पत्रिका प्राप्त होना अति आवश्यक है। रिक्तता की त्रुटि होने से विचारों के मंथन में भी गतिरोध पैदा हो जाता है।

**-सत्यनारायण तुलस्यान,** मुजफ्फरपुर

'समाज विकास' दिसम्बर २००४ अंक प्राप्त हुई। यह ऐतिहासिक अवसर पर प्रकाशित विशेषांक है, इसमें मेरे लेख को स्थान मिला। मैं अत्यंत कृतज्ञ हूं। 'समाज विकास' को सभी प्रकार के विचारों के प्रसार में निरन्तर सक्रिय रहना चहिए- मारवाड़ी समुदाय के लिए यह और अधिक आवश्यक है, चूंकि मारवाड़ी लोग सारे देश में और विदेशों में भी बड़ी संख्या में विद्यमान हैं। भारत के किसी अन्य राज्य के इतने लोग इतने स्थानों में नहीं होंगे। जो मारवाड़ी हैं, अर्थात राजस्थानी हैं, वह आवश्यक रूप से अखिल भारतीय हैं और उसका दृष्टिकोण निरंतर विश्व व्यापक रहना चाहिए। इसमें यह आवश्यक है कि उसे सभी ओर के सभी प्रकार के विचार मिलते रहें और वह अधिकतम व्यापक दृष्टि से विचार करता रहे। रहना तो विश्व भर में हो और चिन्तन सीमित हो, यह लाभकारी नहीं हो सकता। राजस्थान मारवाड़ तक सीमित नहीं है- राजस्थान का जो हित चाहते हैं उन्हें राज्य के सभी जिलों की भावनाओं को निरंतर अपने ध्यान में रखना चाहिए।

**- राजेन्द्र शंकर भट्ट,** जयपुर

# छद्म समाजसेवियों से समाज को बचाना होगा

✍ मोहन लाल तुलस्यान

सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे निहित स्वार्थों और संकीर्णताओं से ऊपर उठकर व्यापक समाज के हित में काम करेंगे एवं समाज को सुगंठित, सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत व सुशिक्षित बनाने के उपायों की निरंतर खोज करते हुए एक आदर्श समाज की स्थापना का प्रयास करेंगे। समाज, जो परिवारों के समूह का संगठनात्मक स्वरूप है, मानव सभ्यता के इतिहास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने के लिए जाना जाता रहा है। प्रागैतिहासिक युग में ही जंगलों, गुफाओं में रह रहे मानव को एकत्रित होने के लिए समाज के अवाधारणा की जरूरत पड़ी थी और वे समाज की संरचना में एकजुट हुए भी।

सभ्यताओं के विकास की कहानी विभिन्न समाजों के विकास की कहानी ही है। ऐतिहासिक क्रम में जो समाज अपने को समयानुरूप ढालने में सक्षम रहा, ज्ञान-विज्ञान की प्रगति में अपनी भागीदारी निभाता रहा एवं वर्चस्व की लड़ाई में अपनी संप्रभुता बनाये रखने में सफल रहा वही समाज अपने अस्तित्व को बनाए और बचाए रख पाने में कामयाब रहा।

समय की धारा के विरुद्ध न तो व्यक्ति की अस्तित्व रक्षा संभव है, न समाज की।

आज मारवाड़ी समाज का जो स्वरूप है एवं पूरी दुनिया में उसकी जो स्थिति है वह वर्षों की नहीं, सदियों की धाराप्रवाह विकासोन्मुखी मानसिकता का परिणाम है। हमारे पूर्वजों ने, मनीषियों ने समाज को जो आदर्श दिया, मार्ग दिखलाया उसी का अनुसरण कर हम आज यहां तक पहुंचे हैं। उन अनाम, निष्काम, सेवाभावी मनीषियों की स्मृति भले शेष न बची हो लेकिन उनका कृतित्व अमर है। यही किसी समाज की उन्नति का सबसे अहम बिन्दु है कि उसके सदस्य बिना नाम और दाम की चिन्ता के सतत् सद्कर्म में उद्यत हों। सामाजिकता में नाम और दाम की इच्छा समाज को गलत रास्ते पर संचालित करती है, सामाजिक विषमता को उजागर करती है एवं अन्ततः समाज के विभाजन का कारण बनती है।

व्यापारी प्रवृत्ति का होते हुए भी मारवाड़ी समाज ने अगर चहुंमुखी उन्नति की, जीवन के हर क्षेत्र में अपनी सफलता का परचम लहराया तो यह उन निष्काम योगियों की प्रेरणा से जिन्हें अपने से अधिक समाज की चिन्ता थी। जब तक मारवाड़ी समाज का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथों में रहा जो संकीर्णताओं से ऊर्ध्व व्यापकता के हिमायती थे, जिनके लिए जीवन का उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना और सुख भोगना भर नहीं होकर समाज के गरीब, उपेक्षित तबके के लिए भी सुख का इंतजाम करना था एवं जो धन की समान वितरण के माध्यम से पूरे समाज की उन्नति को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे, तब तक यह समाज पूरी दुनिया में अपनी उदारता, विराटता एवं कर्मठता के लिए जाना जाता रहा। तब पैसा कमाकर सेठ कहलाने की इच्छा रखने वाले लोगों को साधना करनी पड़ती थी, अपने पैसे से समाज के कल्याण की योजनाओं को पूरा कर दिखाना होता था और निरंतरता बनाए रखनी पड़ती थी। कई पीढ़ी के निरंतर व्यावसायिक दक्षता से कोई परिवार प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाता था।

आज युग बदला है, मानसिकता बदली है एवं इसी के साथ समाज का स्वरूप भी बदला है। आज रातोंरात पैसा कमाकर प्रतिष्ठा प्राप्त करने की होड़ है एवं इसने गलाकाट प्रतियोगिता को सामाजिकता का जामा पहनाया है।

विगत वर्षों में वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर आदर्शों, सिद्धान्तों एवं नैतिकता में जो गिरावट आई है उसने मारवाड़ी समाज को भी गहरे प्रभावित किया है। समाज अपने गौरव गाथा को भूलकर पतन की राह पर अग्रसर होता गया है एवं ऐसे प्रयत्नों को रोकने की इच्छा शक्ति कम से कमतर होती गई है।

अर्थ की प्रधानता ने समाज और सामाजिकता ही नहीं पारिवारिकता को भी अर्थहीन कर दिया है। व्यक्ति के उद्यम का एकमात्र लक्ष्य अपने परिवार (जिसमें पत्नी और बच्चे ही शामिल है) को सुखी बनाना भर रह गया है। व्यापक समाज की चिन्ता किसी को नहीं है। इस स्थिति का फायदा उठाकर कतिपय ऐसे तथाकथित समाजसेवियों और जेबी सामाजिक संस्थाओं का उदय हुआ है जिनका काम समाज की कीमत पर अपना घर भरना है। इन तथाकथित समाजसेवियों का सामाजिकता, नैतिकता से दूर-दूर का लेना-देना नहीं है। ये तो बस दो-चार चंट लोगों की टोली बनाकर फूहड़ कार्यक्रमों के आयोजन की रूपरेखा बनाते हैं और जमकर पैसा वसूलते हैं। परंपरागत संस्कृति और आचरण को धता बताकर विकृत संस्कृति के प्रचार-प्रसार को इन्होंने अपना ध्येय बना लिया है। ये गलत तरीके से कमाई गई रकम को अपने प्रचार के लिए जमकर लुटाते हैं एवं उधार के ज्ञान बांटकर आत्मसंतोष का अनुभव करते हैं। जबसे ऐसे तथाकथित समाजसेवियों की संख्या बढ़ी है समाज की छवि धूमिल होती गई है। अच्छे लोग, जो सामाजिक भावना रखते हैं एवं समाज के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं, संसाधनों व सहयोगिता के अभाव में उभर ही नहीं पाते।

समाज के भविष्य के लिए यह खतरे की घंटी है। आदर्श, सिद्धांत, नैतिकता की रक्षा न कर पाना समाज के कमजोर होने की निशानी होती है एवं कमजोर समाज का भविष्य असुरक्षित होता है।

अतएव यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि समाज के नेतृत्व में आमूल परिवर्तन हो और कमियों-खामियों की व्याख्या के साथ-साथ सामाजिक आधार को दृढ़ से दृढ़तर बनाने की कोशिशें तेज से तेजतर हों। नई पीढ़ी को, नई सोच के लोगों को भी इस मुहिम में अग्रिम पंक्ति में रखा जाना चाहिए ताकि समाज की सभी कड़ियों में सामंजस्य बनाने में सहूलियत हो।

# पारिवारिक व्यावसायिक घरानों में बढ़ती कलह

✍ सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

"मुकेश और अनिल अम्बानी आपस में क्यों लड़ रहे हैं, उनके पास क्या कमी है" - मेरे एकलौते लड़के के इस सवाल ने मुझे सचमुच सोच में डाल दिया। कहावत है कि पारिवारिक झगड़े या तो बहुत अमीरी में होते है या बहुत तंगी में। तंगी का तो पता नहीं धन के बंटवारे के लिए बाप-बेटे, भाई-भाई यहां तक कि मां-बेटे के बीच भी कलह एवं फूट बढ़ रही है। यह कोई मारवाड़ी समाज की बात नहीं है सभी पारिवारिक बड़े व्यावसायिक घराने इसकी चपेट में आ रहे हैं। कहीं उत्तराधिकार का झगड़ा है तो कहीं बंटवारे का। दो अम्बानी भाईयों के बीच करीब १ लाख करोड़ रुपयों की अथाह सम्पत्ति है फिर भी झगड़ा है।

एक समय था कि जितने लड़के हो उतने ही 'हाथ' समझे जाते थे। बड़े लड़के को 'कुर्सी' मिलती थी। पीढ़ी दर पीढ़ी उत्तराधिकार 'बड़े' को मिलता रहता था। आजकल दो लड़कों को एक रखना दुश्वार होता जा रहा है। किसी जमाने में परिवार में बंटवारा दु:ख एवं शर्म की बात थी, जो आज एक आम बात है। शांतिपूर्वक एवं भाईचारे में किया गया बंटवारा एक बड़ी उपलब्धि तथा इज्जत की बात माना जाता है। मारवाड़ी समाज प्राय: सभी सिरमौर घरानों- बिड़ला, बांगड़, गोयनका, सिंघानिया, मोदी आदि में पिछले दो-तीन दशकों में भीतर- भीतर आपसी बंटवारा हो गया है। लेकिन अन्य कई परिवारों में फूट एवं कलह खुलकर सामने आयी। भाई-भाई के झगड़े इस हद तक बिगड़े कि खुशी के मौके तो दरकिनार एक दूसरे की गमी में भी बैठने तक नहीं गये।

### देश की सबसे बड़ी १० निजी कम्पनियां

(३१ मार्च २००३)

| | |
|---|---|
| १. रिलायंस | ६. रेनबेक्सी |
| २. हिन्दुस्तान लीवर | ७. एचडीएफसी |
| ३. विप्रो | ८. आईसीआईआई बैंक |
| ४. इन्फोसिस | ९. भारती टेलीवेंचर |
| ५. आईटीसी | १०. डा. रेड्डी लेब। |

*उक्त सूची में एक भी मारवाड़ी कम्पनी नहीं है।*

प्रमुख मारवाड़ी कम्पनियों की स्थिति इस प्रकार है- हिन्डालको (१२) गुजरात आटो (१७), ग्रासीम (२३), जी टेलीफिल्म (२५), गुजरात अम्बुजा (२८)। शेयर केपिटेलाइजेशन के आधार पर तैयार की गई इस सूची में बाकी मारवाड़ी कम्पनियां ५०वें स्थान के बाद है।

देश के सबसे बड़े १०० औद्योगिक घरानों में ५० से अधिक पर पारिवारिक मालिकाना है। बैंक एवं आर्थिक संस्थाएं उन सभी घरानों पर नजर रखती है जहां एक से अधिक उत्तराधिकारी हैं। स्व. माधोप्रसाद बिड़ला की सम्पति के विवाद के बाद ८४ वर्षीय बसन्त कुमार बिड़ला ने अपने ६००० करोड़ के औद्योगिक साम्राज्य का बंटवारा अपने जीवनकाल में करना तय कर लिया है। उधर दिल्ली में भाई कृष्ण कुमार बिड़ला भी अपनी तीनों लड़कियों के बीच बंटवारा तय कर लिया है।

लेकिन सब जगह इतना आसान नहीं होता है। ५००० करोड़ के बजाय समूह के कर्त्ताधर्त्ता राहुल बजाज कई वर्षों से तय नहीं कर पा रहे हैं कि अपने चार छोटे भाईयों के बीच कैसे बंटवारा करे। शिशिर बजाज बंटवारे पर अड़े हैं। राहुल बजाज के सामने अपने दोनों लड़कों - राजीव एवं संजीव के बीच बंटवारा भी एक बड़ा प्रश्न है। राहुल बजाज का कहना है कि पारिवारिक घरानों के बंटवारे में मालिकाना हक और प्रबन्धन को अलग-अलग करने से कई विवादों से बचा जा सकता है।

ईसार ग्रुप के चेयरमैन शशि रूइया को भी देर-सबेर उत्तराधिकार तय करना होगा- न सिर्फ अपने और अपने भाई रवि के बीच- साथ ही अपने लड़कों- प्रशांत तथा अंशुमान के बीच और भाई रवि के दोनों बच्चों- स्मिति और रेवन्त के लिए भी। भारती के मालिक सुनील मित्तल (४७) को भी अपने दोनों भाइयों- राकेश (४५) और रंजन (४४) के लिए तय करना है।

प्राय: देखा गया है कि झगड़ा पैसे को लेकर नहीं कुर्सी को लेकर होता है। कुछ घरानों ने इसका रास्ता निकाला है आप मालिक है, आपको मालिकाना शेयर और लाभ का हिस्सा भी मिलेगा, लेकिन चेयरमैन या मैनेजिंग डायरेक्टर की कुर्सी बाहरी 'प्रोफेसनल' को दी जायेगी। गोदरेज और डाबर ने 'मैनेजमेंट काउंसिल' बनाये हैं जहां परिवार के सभी 'पुरुष' सदस्य है तथा मिलजुल कर निर्णय लिया जाता है। गोदरेज में तो १५ साल के परिवार के लड़के को भी मासिक बैठक में आमंत्रित किया जाता है जिससे उसे न सिर्फ जानकारी रहे बल्कि उसे तैयार भी किया जा सके।

अब बड़ा लड़का कुर्सी पर बैठेगा यह नहीं है। जो काबिल है उसे पद मिलेगा, हिस्सा सबका बराबर है। पारिवारिक औद्योगिक घरानों की सबसे बड़ी ताकत मिला जुला परिवार है। देखा गया है कि जो भी परिवार विभाजित हुए हैं वे कमजोर हुए हैं। चाहे वह बिड़ला परिवार हो या गोयनका। बिड़ला विभाजन के पूर्व सभी भाई बराबर थे अब अगर बी.के.-आदित्य ग्रुप को छोड़ सभी कमजोर हुए हैं। उसी तरह गोयनका विभाजन के बाद 'आरपी' को छोड़कर बाकी दोनों भाई जेपी और जीपी ने खोया ही है। बन्द मुट्ठी में बड़ी ताकत है।

+++ ○○ +++

## नये वर्ष का नया संदेश

■ जगदीश प्रसाद तुलस्यान, मुजफ्फरपुर

कैसे स्वागत करूं तुम्हारा, चारों ओर अंधेरा है
बीते कल की बातें करता, आया कहां सबेरा है।

मन दर्पण में आप समझ लो, सब कुछ तुम्हें बताऊं क्या
इस जग में कोई नहीं मेरा, ना कोई अपना तेरा है।

आपदायें आती रहती है, अपनी प्यारी धरती पर
जीवन से हारो मत साथी, आने को नया सवेरा है।

अपने को चिंतित मत करना, चीता समान जीगर होगा
ज्ञान लोक तेरे अन्दर है, अपना वतन ही तेरा है।

गुणवत्ता में हो परिपक्व तुम, सफल प्रबन्ध बनाना है
आवश्यकता आविष्कार की जननी, गतिमय हृदय तुम्हारा है।

दिग्भ्रमित मत होना मानव, संजीवनी कहलाते हो।
देश निर्माता बनो जगत में, मुक्त हृदय जब तेरा है।

मोह पाश में बंधा हुआ मन, खोज रहा है अपनो को
नव वर्ष शुभकामनायें लाओ, अनुभव ने तुम्हें पुकारा है।

'तुलस्यान' सच्चे शिक्षक बन, अपने जग को राह दिखाओ
अपनी प्यारी इस धरती पर, लाना नया सवेरा है।

## नववर्ष की निर्मल कामना

■ रंजू मोदी, अंगुल

नववर्ष में नयी आस्था
के अंकुर लहराएंगे
सुख वैभव की किरण सुनहरी
घर आंगन में लाएंगे।
भेद भाव के जाल काटकर
मैत्री पुष्प खिलायेंगे।
छू सके सभी ऊंचाइयों को
हम ऐसी युक्ति लगायेंगे।।

कल जो भूल हुई उसको हम
फिर से ना दोहरायेंगे।
आज किस राह पर आगे बढ़ना है
इस चिन्तन का दीप जलायेंगे।।

नहीं होगा अब किसी कोख में
नारी अंश का निर्मम अवसान।
ना ही होगी अब दहेज की
बेटी पर कोई बलिदान।।

सार्थक हो अब नव वर्ष का
अभिनव यह स्वर्णिम विहान।
दृढ़ संकल्पित यदि बढ़े हम
तो धरती होगी फिर स्वर्ग समान।।

# सामाजिक सरोकार से जुड़कर अपनी पहचान बनाएं

✍ भानीराम सुरेका, महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सामाजिक विचार क्रान्ति यात्रा के ७०वें पड़ाव पर पहुंच चुके हैं हम। किसी सामाजिक संस्था का इतने लंबे समय तक निरंतर गतिशील रहना और बदलते समय के अनुरूप नये विचारों का प्रतिपादन करते रहना निश्चित रूप से उल्लेखनीय बात है।

सम्मेलन एक वैचारिक संस्था है। बदलती परिस्थितियों और चुनौतियों पर गहन मंथन-चिंतन करके समयानुरूप विचारों से समाज का मार्गदर्शन करना, आवश्यकता पड़ने पर आन्दोलन की रूपरेखा बनाना और प्रवासी मारवाड़ी समाज को हर तरह से सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सुसंस्कृत बनाये रखने के लिए हरसंभव उपाय करना सम्मेलन की सर्वोपरि प्राथमिकता रही है। किसी राजनीतिक विचारधारा का प्रतिपादन न कर मानवीय दृष्टि से समाज को संचालित करने की उदारता ने सम्मेलन को सर्वग्राही बनाया है। १९३५ से आज तक जो भी सम्मेलन से जुड़े हैं उनकी भावना समग्र प्रवासी मारवाड़ी समाज के हितों की निःस्वार्थ वकालत करने की रही है।

मारवाड़ी समाज का विस्तार जिस प्रकार से देश के कोने-कोने में है वह इस बात का परिचायक है कि यह समाज सिर्फ अनुकूलताओं में ही नहीं प्रतिकूलताओं में भी अपनी पहचान कायम करने में माहिर है। कठोर परिश्रम करने की मानसिकता, काम के प्रति लगन एवं सबको साथ लेकर चलने की सदाशयता के चलते यह समाज सभी समाजों के लिए आदर्शस्वरूप रहा है।

आदर्श मारवाड़ी समाज के आदर्श संगठन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७०वें स्थापना दिवस पर जरूरी है कि हम भविष्य की ओर ताकें ताकि समाज और सम्मेलन की प्रासंगिकता आने वाले वर्षों में भी निरंतर बनी रह सके, इसकी गरीमा बनाये रखें।

राजस्थान, हरियाणा और मालवा से जीविकोपार्जन की तलाश में देशांतर को निकले सभी मारवाड़ी एक हैं एवं इनकी पहचान का कोई संकट नहीं है। कभी था भी नहीं। जो लोग मतांतर की बात करते हैं वे असलियत को झुठलाना चाहते हैं। अतः सभी मारवाड़ियों का यह कर्त्तव्य है कि वे एकबद्ध होकर अपनी परंपरा, संस्कृति और सौहार्द की रक्षा करते हुए जहां कहीं भी हैं वहां अपनी स्वतंत्र पहचान बनाये रखें। साथ ही सदा की तरह स्थानीय समाजों के साथ घुल-मिलकर उनके विकास में भी सहभागी जरूर बनें। चूंकि अ.भा.मा. सम्मेलन प्रवासी मारवाड़ियों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है इसलिए सम्मेलन से जुड़कर सामाजिक विचार-विमर्श को गति देना, अपसंस्कृतियों से समाज को बचाने की पहल करना भी मारवाड़ियों का कर्त्तव्य है।

एक समय सामाजिक विकृतियों को खत्म करने की पहल करने में प्रवासी मारवाड़ी खासकर कोलकाता के, अत्यधिक सक्रिय थे, अभी यह प्रक्रिया धीमी पड़ गई है जिसे तेज करने की जरूरत हैं।

सम्मेलन के पदाधिकारियों का एक बहुत पुराना सपना था- 'सम्मेलन भवन' के निर्माण का। हमें खुशी है कि समाज के लोगों की सदिच्छा और सहयोग से एक भवन का खरीदा जाना संभव हुआ है, लेकिन एक अत्याधुनिक सुविधा संपन्न अतिथिशाला व गरीब मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए विवाह स्थल उपलब्ध कराने हेतु नवीन भवन के निर्माण का काम अभी बाकी है। यदि समाज के लोग इस मिशन में रूचि ले तो शीघ्र ही यह सपना भी साकार हो जाएगा।

सम्मेलन की विचार क्रांति यात्रा जारी है। शाखाओं, प्रशाखाओं एवं प्रादेशिक सम्मेलनों से अपेक्षा है कि वे निरंतर गतिविधि बनाये रखें, संगठन बनाये रखें एवं समाज के सभी वर्गों के हितों के लिए संघर्ष जारी रखें। केन्द्रीय स्तर पर हम उनके साथ हैं और जहां भी जैसी जरूरत होगी वहां अपना तन-मन-धन देकर वृहत्तर सामाजिक सरोकारों की रक्षा को कृतसंकल्प हैं।

**अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७०वें स्थापना दिवस के महान अवसर पर सम्मेलन और समाज से जुड़े सभी लोगों को नववर्ष की शुभकामना। नववर्ष सबके लिए मंगलमय हो एवं सभी स्वस्थ, सानंद, सक्रिय रहकर परिवार, समाज और राष्ट्र के हित में अपना अमूल्य योगदान देते रहें, इसी कामना के साथ...।**

## वर को दहेज के बदले चप्पल

कछार जिले के धलाई ग्राम की एक कन्या द्वारा वर महोदय की चप्पलों से मरम्मत की जाने संबंधी एक रोचक घटना को यहां के दैनिक पत्रों ने प्रकाशित किया है। प्रकाशित समाचार में कहा गया है कि वर महोदय ने दहेज में पांच सौ रुपये लिये बिना विवाह मण्डप में जाने से इनकार कर दिया। इस समाचार को सुन कर उस कन्या ने, जिसका विवाह आयोजित था, घर से बाहर निकल कर वर महोदय से कहा कि मण्डप में चलिये। उन्होंने कहा कि- बिना दहेज के रुपये लिए एक कदम भी नहीं बढ़ाऊंगा। उसने कहा- आप मुझसे शादी करने आये हैं या रुपये से ? वर महोदय ने कहा- चाहे जो कहो, रुपये लिये बिना मैं मण्डप में नहीं जाऊंगा। बस क्या था, कन्या ने चप्पल निकाल कर उनके गाल लाल कर दिये। और फिर उसी रात को उस कन्या की शादी एक अन्य युवक के साथ कर दी गई। (अखबार से)

# राजस्थान के इतिहास के जनक टॉड को विस्मृत न करें

✍ गौरीशंकर कायां, कोलकाता

भारत में इतिहास लेखन की शुरूआत सिकन्दर के आक्रमण के बाद हुई। इससे पहले किसी ने भी क्रमिक इतिहास का ब्यौरा नहीं लिखा। पहली बार मेगास्थनीज ने 'इण्डिका' नामक ऐतिहासिक ग्रंथ लिखकर भारतीय इतिहास लेखन की शुरूआत की।

ऐसा नहीं है कि इससे पूर्व भारत में लेखन कला का विकास नहीं हुआ था। दुनिया के प्राचीनतम ग्रंथ ऋगवेद से लेकर बाद के तीन वेद, उपनिषद, पुराण, ब्राह्मण आदि ग्रंथ इसी भारत में रचे गये पर ये काव्य और गद्य की सीमा में थे। इन ग्रंथों के आधार पर ऐतिहासिक काल खंड का निर्णय कर पाना मुश्किल है। यहां तक कि रामायण और महाभारत से भी ऐतिहासिकता की अपेक्षा नहीं की जा सकती। हालांकि ये सारे ग्रंथ महत्वपूर्ण हैं एवं उस समय ज्ञान के क्षेत्र में भारत की स्थिति को बखूबी बल प्रदान करते हैं।

भारत में इतिहास लेखन की परम्परा के न होने से एवं तथ्यों की अनभिज्ञता के कारण ऐतिहासिक विसंगति की स्थिति उत्पन्न होती रही है।

जब समग्र देश का इतिहास ही नहीं लिखा गया तो उसके प्रांतों के इतिहास की सुध कौन लेता? आज पूरे देश और प्रांतों का जो इतिहास हम पढ़ रहे हैं उसका अधिकांश भाग अंग्रेजों के समय में लिखा गया। राजस्थान का इतिहास भी इसका अपवाद नहीं है।

राजस्थान का जो इतिहास हमें मालूम है उसे खोजने का श्रेय मूलत: कर्नल जेम्स टॉड को जाता है जिसने जैन-यति ज्ञानचंद्र की सहायता से सन् १८२९ में 'एनाल्स एंड एंटीक्विटीज आफ राजस्थान' नामक विशाल एवं विश्वविख्यात ग्रंथ प्रकाशित कर राजस्थान को विश्व के मानचित्र पर प्रतिष्ठित किया। इस ग्रंथ में उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, कोटा और बूंदी के राजवंशों का विस्तृत इतिहास समाहृत कर कर्नल टॉड ने राजस्थान की गौरवशाली शौर्यगाथाओं को विश्व के सम्मुख उपस्थित किया।

हालांकि टॉड से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व जोधपुर के दीवान मुहजोत नै ने सन् १६७० में एक पुस्तक लिखी थी जो 'मूथा की ख्यात' के नाम से प्रसिद्ध है। यह पुस्तक अव्यवस्थित ढंग से लिखी गई थी। तथापि राजस्थान के इतिहास के संबंध में उपलब्ध ग्रंथों में सबसे प्राचीन होने से इस 'ख्यात' का अपना महत्व है पर राजस्थान के इतिहास को लेकर गहन खोजबीन की शुरूआत कर्नल टॉड के ग्रंथ प्रकाशन के बाद ही हुई।

कर्नल टॉड के ग्रंथ को आधार मानकर बाबू ज्वाला सहाय माथुर ने सन् १८७८ में 'बकाये राजस्थान' और मुंशी देवी प्रसाद कायस्थ ने सन् १८९३ में राजाओं के जीवन लिखे। बूंदी के राजकवि सूर्यमल्ल मिश्रण का ग्रंथ 'वंश भास्कर' सन् १८९८ में प्रकाशित हुआ। इस तरह एक सिलसिला ही चल पड़ा।

कर्नल टॉड के ग्रंथ से प्रभावित होकर बंगाल के लेखकों, कवियों ने राजस्थान को अपने लेखन का केन्द्र बिन्दु बनाया। बंगला के काव्य, नाटक, उपन्यास, गल्प साहित्य की ये विधाएं राजस्थान के सौन्दर्य से, शौर्य से, त्याग बलिदान से, आन बान शान के कथानकों से जगमगा उठीं और राष्ट्रप्रेम की दुर्दमनीय धारा अजस्र वेग से प्रवाहित हो चली जो आज भी रूकी नहीं है, केवल क्षणिक धीमी हुई है।

राजस्थान की श्लाधा में चाहे कुछ भी लिखा जाए, उसका शीर्षक टॉड की यह मृत्युंजयी वाणी ही रहती आई है।

राजस्थान में कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नहीं है कि जिसमें थर्मोपोली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसी बस्ती मिले, जहां लियोनिडास जैसा वीर पुरुष पैदा न हुआ हो।

कर्नल टॉड के महत्व को रेखांकित करते हुए पुरातत्वविद् मुनि जिन विजय जी ने लिखा है- 'नूतन भारत के मानचित्र में पश्चिमोत्तर विभाग वाले कोण में राजस्थान के नाम से जो विशाल भूखण्ड अङ्कित है और क्षेत्रफल की दृष्टि से नवीन भारत के १५ महाजनपदों में जिसको द्वितीय स्थान प्राप्त है उस विशाल एवं महान राजस्थान के भव्य नाम आद्य निर्माता और उसके जनपदीय गौरव को संसार के सम्मुख प्रथमत: सुप्रसिद्ध करने वाला स्वर्गीय कर्नल टॉड था। वह केवल राजस्थान की सन्तानों के लिए ही नहीं, अपितु सारे भारत की प्राणवान सन्तानों के लिए सदा स्मरणीय और पुण्यश्लोक महान ग्रन्थकार तथा परमहितैषी नर-पुङ्गव के रूप में ज्ञात एवं उल्लेखनीय रहेगा। स्वतंत्र भारत को राजस्थान नामक नूतन भद्रजनपद की कल्पना देने का श्रेय कर्नल जेम्स टॉड को है। उसी ने विश्व के इतिहास विषयक समग्र वाङमय के असंख्य ग्रंथ रत्नों के पुंज में, सर्वप्रथम राजस्थान के नाम से अंकित और उसके अतीत के इतिवृत्त से अलंकृत एक अपूर्व और अकल्पित ग्रंथ रत्न को समर्पित किया है।

लेकिन दुर्भाग्यजनक रूप से स्वातंत्रोत्तर भारत में राजस्थानवासियों ने अपने इतिहास के जनक कर्नल टॉड को विस्मृत कर दिया। सरकारें तो राजनीति में मशगुल रहीं पर लेखकों, कवियों, इतिहासकारों के मन में भी कभी यह विचार नहीं आया कि कर्नल टॉड की स्मृति को चिरन्तन बनाने के उपाये किये जाएं। मैंने व्यक्तिगत तौर पर राजस्थान के शीर्षस्थ राजनीतिक नेतृत्व से बात की और कहा कि कर्नल टॉड की याद में कुछ ऐसा करें जिससे त्याग तपस्या और तन्मयता की वह प्रतिमूर्ति आनेवाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहे। पर बेकार, किसी ने अब तक कुछ नहीं किया।

मैं अंग्रेजी साम्राज्य की कारगुजारियों का प्रशंसक नहीं पर जिन अंग्रेजों ने हमारी अस्मिता को पहचान दी उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना तो नैतिकता की पुकार है।

मेरी ख्वाहिश है कि राजस्थान में नहीं तो कम से कम बंगाल जो एक समय राजस्थानियों का दूसरा घर बना था एवं जहां के साहित्य में राजस्थान की चर्चा सर्वाधिक हुई है, में कर्नल टॉड की एक मूर्ति स्थापित हो एवं ऐसा एक संस्थान बने जो उस महापुरुष को अमरत्व प्रदान कर सके। इस पुनीत कार्य में मेरे योगदान की जरूरत पड़ी तो मुझे अत्यधिक प्रसन्नता होगी।

# भारत में नारी का स्थान

✍ बालकृष्ण गोयनका, चेन्नई, उपाध्यक्ष, अ.भा.मा. सम्मेलन

एक युग था उस समय- पता नहीं क्यों साधु-संत नारी से भयभीत रहते थे? जैसे संत कबीर कहते हैं :-

**चलो चलो सब कोई कहै, पहुंचे विरला कोय।**
**एक माया अरु कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥**

तमिल संतों ने भी विविध प्रकार से नारी संग की निन्दा की है। स्त्री को 'माया' मान कर संत 'पटटीनतार' कहते हैं- कर्ण सौन्दर्य, नासिक सौन्दर्य, नयन सौन्दर्य आदि को लेकर नारी अपने सामने आने वाली 'माया' को यम द्वारा भेजी गयी जीवन हरिणी के साथ, रमन करने वाले हीन बुद्धि वाले मनुष्य के बारे में क्या कहूं?

अरस्तु ने स्त्री को संसार की अधूरी रचना कहा- ईश्वर को जहां पुरुष बनाने में असफलता हो गई, वहां नारी बन गई। अर्थात् स्त्री ईश्वर की असफल रचना है। उन्हें कोई पूछे स्त्री जैसी अधूरी रचना से अरस्तू जैसा पूर्ण पुरुष कैसे उत्पन्न हो सकता है।

> भारत के वैदिक इतिहास में एक से बढ़ कर एक विदुषी व विद्वता से परिपूर्ण नारियां होती थीं। मध्य कालीन युग में इसकी उल्टी स्थिति हुई है। वह समाज के सुधारवादी प्रयासों से पिछले साठ-सत्तर वर्षों में पूर्णत: परिवर्तित हो गई है और समाज में सुशिक्षित नारियों की कमी नहीं है। विवाह सदियों के लिए भी ऐसे दृष्टांत सामने आ रहे हैं जहां लड़की लड़के को नापसन्द करती है एवं उद्योग, व्यापार, शिक्षा आदि हरेक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने लगी हैं।

भारतीय आध्यात्मिक पुरुषों ने भी अध्यात्म मार्ग में स्त्री को बाधक समझ कर उनकी निन्दा की है, जिसमें आचार्य शंकराचार्य, सूर, तुलसी और कबीर मुख्य हैं। श्री शंकराचार्य ने स्त्रियों को नरक का द्वार कह कर अपमानित किया। जबकि स्त्री रूपी नरक से शंकराचार्य जैसा स्वर्ग उत्पन्न होना असम्भव है। तुलसीदास ने नारी को ढोल गंवार व शुद्रों की तरह ताड़न का अधिकारी बनाया है। परंतु उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ भी उपलब्ध कर पाया है, वह उनकी पत्नी 'रतनावली' के फटकार का ही परिणाम था। सूरदास ने स्त्रियों के चित्र तक भी देखने से मना किया था। कबीरदास ने नारी को 'सर्पवत विष की बेल' कह कर कभी उनसे सम्पर्क नहीं करने का आदेश किया है। यह सभी महापुरुषों का जन्म तो उनकी माता से ही हुआ है। यह स्वार्थी, पक्षपाति, स्वार्द्यन्धि साधु संत उचित अनुचित का ख्याल नहीं रखते थे। प्रश्न है कि इस माया रूपी नारी के बिना मनुष्य जन्म कैसे लेता। बाल्यावस्था में मां ही अपनी संतान को धर्म का ज्ञान, शिक्षा देती है, वह बालक की पहली गुरु है।

इतिहास में वैदिक युग सबसे स्वर्णीय युग कहा जाता है, जिसका मुख्य कारण है कि उस समय स्त्रियों का स्थान समाज में बहुंच ऊंचा था। उन्हें प्राय: सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त था। गार्गी, मैत्रेयी, भावरवी आदि वेद विद्या में पारंगत स्त्रियां पुरुषों के साथ वाद-विवाद तथा शास्त्रार्थ करने वाली हो चुकी है और आज भी है। सीता, सावित्री, द्रोपदी, उर्मिला, गार्गी, घोषा, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी अनेक नारियां जिन्होंने विश्व की नारियों के बीच अपना उदाहरण प्रस्तुत कर उन्हें यह मानने को बाध्य किया था कि सही मायने में भारत की स्त्रियां पुरुषों से कहीं भी, किसी भी मामले में कम नहीं है। घोषा, अपाला, लोपामुद्रा तो वेद मन्त्रों की दृष्टा हुई थी।

भगवान गौतम बुद्ध की शिष्या विशाखा, सूफी संत रवियावसरी आठवीं सदी में जन्मी जिनका अधिक समय ध्यान साधना में व्यतीत होता था। राजस्थान की पन्ना धाय अपने राजा के पुत्र की रक्षा के लिए अपने पुत्र की कुर्बानी दे दी थी। राजस्थान की राजपूत नारियां अपने पति को आरती कर युद्ध के मैदान में भेजती थी और चेतावनी देती थी :-

**पाछा फिर मत झांकज्यों, पग मत दीजो टार।**
**कट भल जाज्यों रण में, पर मत आज्यो हार॥**
**सीख राज री होय तो, हूं भी चालू साथ।**
**दुश्मन भी फिर देख ले, म्हारा दो दो हाथ॥**

जब गौतम बुद्ध मुक्ति पथ की खोज में घर छोड़ कर चले गये तब उनकी पत्नी यशोधरा रुआंसी होकर कहती हैं-

**प्रियतम तुम श्रुतिपथ से आये।**
**तुम्हें हृदय में रख कर मैंने अधर कपाट लगाये।**
**मेरे हास विलास! किन्तु क्या भाग्य तुम्हें रख पाये?**
**दृष्टि मार्ग से निकल गये थे तुम रसमय मन भाये।**

अपनी मर्यादा, अनुशासन, धार्मिक निष्ठा, उच्च सामाजिक एवं परिवारिक संस्कार और दूसरों के सुख के लिए अपने को तिल तिल होम देने वाली उद्दत शक्ति, भारतीय नारी में समायी है। वे सारे गुण, जो हमारी पुरातन संस्कृति के अंग हैं, समाये हुए हैं। पति एवं बुजुर्गों की आज्ञा पालन, पूर्ण अनुशासन से रह कर, पूरे परिवार के साथ यथोचित व्यवहार, यह गुण ही परिवार को बांधे रखता है।

धीरे-धीरे, विशेष कर विदेशी आक्रान्ताओं के भारत में आक्रमण होने पर विदेशी विचारधाराएं, उनके साथ, भारतीय समाज में प्रविष्ट हो गई। जैसे कि यहुदी मतानुसार स्त्रियां पशुधन से अधिक कुछ नहीं है। वे स्त्रियों को सैनिक उत्पन्न करने वाला एक यंत्र की भांति मानते हैं। इसाई लोग स्त्रियों में आत्मा ही स्वीकार नहीं करते। पहले ईसाइयों में नारियां पादरिनी धर्म प्रचारिका का काम नहीं कर सकती थी। इस्लाम धर्म में स्त्रियों को ऐसा समझा, जैसे किसान अपने खेतों को जैसा चाहता है, खोदता, बोता और उगाता है। वे मानते हैं कि नारियों की अपनी कोई इच्छा या अस्तित्व नहीं है। वे भारत में आये तो उनके

विचार धाराओं का प्रचार भारतीयों से भी धीरे-धीरे प्रविष्ट हो गया।

नवाबों के राज्यकाल में, जो भी सुन्दर हिन्दु स्त्रियां होती, उनके चाटुकार भाट आदि वे नारियों को उन्हें उपहार में भेंट के रूप में भेज देते थे। इस तरह हिन्दु कन्याओं का अपहरण होने लगा था। इससे बाल विवाह, पर्दा प्रथा हिन्दु समाज में आये। स्त्रियों का घर से बाहर आवागमन खतरे से खाली नहीं था। उनके लिए विद्या अध्ययन, उच्च शिक्षा निषेध हो गया। कहीं बाहर जाना जरूरी भी होता तो घूंघट निकाल कर निकलती। इस प्रकार मध्य युग, स्त्रियों के लिए अभिशाप सिद्ध हुआ।

तत्कालीन महीधर, सायण, वैन्कटेश्वर आदि वेदों के भाष्यकार तथा अनेक कवि और साहित्यकार जो प्राय: राज्याश्रित थे, वे उन राजाओं के प्रभाव में आकर वैदिक शास्त्रों का इस प्रकार भाष्य किए, जिसमें नारियों की निंदा की गई। बाल विवाह आदि कुप्रथाएं वैदिक धर्म के अनुकूल सिद्ध कर दिए तथा स्त्रियों के लिए पढ़ना, पुरुषों के समान अधिकार, स्वयंवर विवाह होना आदि सभी अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। परंतु अब युग बदल गया है, भारतीय नारियों को नर जैसा ही पूर्ण अधिकार है, हमें गर्व है, हमारे तीन प्रांतों की मुख्य मंत्री नारी है।

हमारे कोई भी धार्मिक संस्कार पत्नी को साथ ले कर ही किये जाते हैं, नारी को प्रधानता दी जाती है, हम यही मानते हैं 'यत्र नारिश्य पूज्यते, तत्र देवता रमन्ते।' हम अपने पूर्वजों की जन्मभूमि को 'जननी जन्म भूमि' कह कर श्रद्धा से नमन करते हैं। 'भैया दूज' 'रक्षाबंधन' बहन भाई का प्रेम भरा त्यौहार आज भी बहुत प्रेम से हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

प्राचीन काल में स्वयंवर की प्रथा थी, योग्य जीवन साथी चुनने का अधिकार कन्या को था, वर्तमान युग में सेठ साहुकारों की कन्या जब विवाह योग्य हो जाती है तो माता पिता को चिन्ता शुरू हो जाती है, वे विवाह शादी के दलालों को एवं मित्र संबंधियों से प्रार्थना करते हैं कि कोई योग्य वर की तलाश करने में मदद करें। संबंध आते हैं, लड़की सजधज कर आती है, जब तक कोई युवक उसे पसंद नहीं कर लेता, यह सिलसिला चलते ही रहता है। पहले वधू-वर को चुनती थी, अब वर वधू को चुनता है। संयुक्त परिवार की प्रथा भी अब टूटने लगी है, सब अलग-अलग अपना जीवन जीना पसंद करते हैं।

++++++ ○○○○ ++++++

# दोस्त मुबारक नया वर्ष हो

■ सोहनलाल बांका, 'सहज' सूरतगढ़

देश-प्रदेश हो उन्नत अपने
जन-जन लगे यह माला जपने
पूरें हो युवकों के सपने
हर घर में सुख-समृद्धि व्यापे
सबके जीवन में उत्कर्ष हो।
दोस्त, मुबारक नया वर्ष हो।

निर्बल को संबल मिल पाये
जुल्म न कोई उन पर ढाये
भटके हुओं को राह दिखाएं
घायल मन को धीरज देवें
अपनेपन का उन्हें स्पर्श हो।
दोस्त, मुबारक नया वर्ष हो।

बच्चों को बचपन लौटायें
श्रम बेगार से उन्हें बचाये
प्रेम-प्यार से उन्हें पढ़ायें
दीन-अनाथ रहे न कोई
जीवन में भरपूर हर्ष हो।
दोस्त, मुबारक नया वर्ष हो।

महिलाओं का मान बढ़ाएं
उत्पीड़न से उन्हें बचायें
योग्य स्थान अपना वो पायें
हर प्रकार के आयोजन में
उनसे पूरा परामर्श हो।
दोस्त, मुबारक नया वर्ष हो।

बुजुर्ग सम्मान हम से पाएं
उनके अनुभव का लाभ उठायें
सेवा कर आशीष कमायें
जिनका जीवन रहा तपोमय
पावन उनका सदा दरस हो।
दोस्त, मुबारक नया वर्ष हो।

जन प्रतिनिधि कर्तव्य पहचाने
जनता के दु:ख दर्द को जाने
मन में कुछ करने की ठानें
'सहज' जग के जुल्म मिटाने
उनके जीवन में संघर्ष हो।
दोस्त, मुबारक नया वर्ष हो।

# सामाजिक संगठन की आवश्यकता क्यों?

✍ **मुकुन्ददास माहेश्वरी,** अध्यक्ष, मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन, जबलपुर

विज्ञान के बदलते परिवेश में जहां मानव-मूल्यों का ह्रास हो रहा है, सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताएं अपने अस्तित्व की रक्षा करने में असफल हो रही है, पश्चिमी सभ्यता हमारे अन्त: को भी ग्रसित करने के लिए बड़ी तेजी से दौड़ लगा रही है। भारतीय समाज अपने अंचल में ही सिकुड़ रहा है, टुकड़ों-टुकड़ों में बंट रहा है। आखिर क्यों हो रहा है? किस कारण हम अपने आपको भूल रहे हैं? क्या होंगे इसके परिणाम !

आज इन प्रश्नों पर गहराई से सोचने की आवश्यकता है। लोग तो यह कहने में भी नहीं चूकते कि क्या करता है समाज हमारे लिए, सब बड़ों-बड़ों का खेल है, उनकी पद लिप्सा है, हमें कुछ लेना-देना नहीं है, हम भले हमारा घर भला। वे अपने आसपास को ही अपनी दुनिया मान बैठते हैं, वही दुनिया उनकी साधन और साध्य है। किन्तु आज हम जिस दुनिया में जी रहे हैं, उसकी तासीर क्या है, उसकी गति क्या है, उसका स्वरूप क्या है। इसे समझना भी तो आवश्यक है। अन्यथा हम पिछड़े रह जाएंगे। परिवर्तित और नित्य नये परिवर्तित परिवेश से समायोजित नहीं हो पायेंगे।

समायोजन हेतु आवश्यकता है शक्ति की, ज्ञान की नये संदर्भों को समझने की। यह सब संभव कैसे हो सकता है? शायद... इसमें समाज की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण मानी गई है। क्योंकि हम भारतीय अभी भी अपने समाज से बंधे हैं, जन्म जीवन और जीवनान्त सामाजिक पर्यावरण में ही सुख-दुख के कारण बनते हैं। परम्पराएं, संस्कृति, संस्कार हमारे खून में समाये रहते हैं, आखिर हैं भी तो हम उसी वृक्ष के अंग। फिर अलगाव कैसा? आज नहीं तो कल, हमें उसी वृक्ष की छाया में जाना पड़ेगा। बच्चे बड़े होंगे, बच्चियां बड़ी होंगी, पीढ़ियां आगे बढ़ेंगी। यह सब कार्य समाज में ही तो होंगे। डाल पेड़ से कटने पर क्या अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकती है? शायद नहीं। डाल का जीवन दाता तो वृद्ध ही है। टहनियां, पत्ते, फल-फूल सभी तो वृक्ष की सृजन शक्ति के उपहार हैं। अत: समाज ही वह बट-वृक्ष है जिसकी छाया में सारा सृजन सम्भव है।

समाज अपनी प्रतिभाओं, परोपकारी व्यक्तियों, सेवाभावी मेधाओं और विशिष्टताओं को संगठित कर निर्मित करता है-सामाजिक संगठन। और यह संगठन एक शक्ति का रूप धारण कर लेता है। इस संगठन के अंग बनकर ही हम इससे लाभ उठा सकते हैं, अपने परिवारिक दायरे का विस्तार कर सकते हैं, अपने परिचय का फैलाव कर सकते हैं, नये-नये विचार, नये-नये संबंधों को ग्राम कर सकते हैं। अन्यथा अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

समाज ही हमारे आनन्द का स्रोत है। समाज में रहकर ही हम अपने परम्परागत उत्सव, मांगलिक कार्य, सनातन काल से जुड़ी पारिवारिक और सामाजिक मान्यताएं, नैतिक विचारधाराएं, संस्कार और उससे जुड़े विश्वास आदि आदि का भली-भांति निर्वहन कर सकते हैं। समाज ही हमारे दुखदर्द का साथी और सहयोगी बनता है। हैं भी हम समाज के अंग इसलिए हमें सामाजिक प्राणी भी कहा गया है। वर्तमान परिपेक्ष में समाज से विरक्त व्यक्ति की कल्पना ही नहीं की जा सकती है, समाज ही तो सर्वोपरि है। अत: हमें सक्रियता और कर्मठता से समाज से जुड़ना चाहिए, समाज की प्रगति आपकी अपनी प्रगति है, समाज की सेवा आपकी अपने सेवा है। आपके अन्त: में यह भावना जन्में कि मैंने अब तक समाज के लिए क्या किया और आगे मैं क्या करूंगा। जिस समाज का अन्त: ऐसी भावना से ओत-प्रोत हो जाता है, वह उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है।

वर्तमान प्रगतिशील, बुद्धिवादी और विकासशील युग में जब चरमोत्कर्ष तथा सर्वांगीण विकास की स्थितियां निर्मित हो रही हैं, लोग सामाजिक संगठन की मजबूती से क्रमश: आगे बढ़ रहे हैं, फिर यह प्रश्न क्यों उभरकर सामने आ रहा है कि आज भी लोग सामाजिक संगठनों से विरक्त हैं? उनमें समाज के प्रति लगाव क्यों नहीं आ पाया? कहीं न कहीं इन संगठनों में कोई कमजोरी तो नहीं है। क्या ये संगठन आज भी रूढ़िवादिता के शिकार हैं। अथवा इनमें वह आकर्षण नहीं आ पाया जिससे लोग आकर्षित हो सकें ? कहीं न कहीं कोई दुर्बल पक्ष अवश्य है। युगानुरूप इनका निराकरण होना चाहिए जिससे समाज की युवाशक्ति भी पूर्ण-लगन और कर्मठता से सामने आये, युवाशक्ति किसी समाज की सर्वश्रेष्ठ शक्ति होती है, इस शक्ति का संगठित होना नितान्त आवश्यक है, यही तो कर्णधार है उज्जवल भविष्य के। जिम्मेदारी अब समाज के कर्णधारों और पदाधिकारियों की है। नित्य नये परिवर्तन हो रहे हैं, समय की सुइयां द्रुत गति से भाग रही हैं, नये-नये मानक स्थापित हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में नवीनता का स्वागत हो और परम्परा की रक्षा हो। इतिहास ही तो शक्ति देता है वर्तमान को और शक्तिशाली वर्तमान ही गढ़ता है भविष्य की उज्ज्वलता के तानेबाने अत: गहराई से सोच-समझकर ऐसी नीतियां और उद्देश्य निश्चित किए जावें जो सर्वकल्याणकारी हो, सर्वेसुखिन: सन्तु हों। हर परिवार में दुंदुभी बजे, हर व्यक्ति संगठन का अंग बने।

व्यक्ति ही समाज की इकाई है, अनेक इकाइयां मिलकर दहाई, सैकड़ा... बनाती हैं। जहां सैकड़ों का महत्व है वहीं इकाई को नकारा नहीं जा सकता। अत: दोनों में सम्मोहन आवश्यक है, दोनों इस पूजा में सम्मिलित हों, समाज गंगा कल्याणकारी बन जावेगी।■

***जीवन काल में रक्तदान, मरणोपरान्त नेत्रदान***

# मानव हृदय में समाज सेवा का भाव

✍ रामगोपाल सराफ, वाराणसी

यह संसार परिवर्तनशील है। समाज का चक्र सबको अपनी इच्छानुसार रंग देता है। एक क्षण पहले जहां वैभव एवं ऐश्वर्य की झंकार होती है तो दूसरे ही क्षण वहां मौत का क्रन्दन सुनाई देने लगता है। समय के परिवर्तन के साथ व्यक्ति बदल जाता है और व्यक्ति के परिवर्तन से उसके विचार, भावनाएं तथा जिस समाज में वह रहता है, सभी परिवर्तित हो जाते हैं।

एक समय वह था जब आदमी बर्बर था। उसके अन्दर विचारों का, भावनाओं का तथा सोचने-समझने की शक्ति का जन्म नहीं हुआ था। उसे सिर्फ अपनी क्षुधा पूर्ति से मतलब था। उस अवस्था में उसके अन्दर न तो समाज की चाह ही उत्पन्न हुई और न सामाजिकता की, लेकिन ज्यों-ज्यों समय का अन्तराल बढ़ता गया व्यक्ति की आवश्यकताएं बढ़ती गईं। और उसे अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अन्य लोगों का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक महसूस होने लगा। अब यह तथ्य स्पष्ट होता है कि मनुष्य की आवश्यकता ने उसके अन्दर सामाजिकता का विकास किया। अब जब व्यक्ति में सहयोग की भावना पनपी तो उसने एक दूसरे के साथ सम्पर्क बढ़ाना शुरू किया। क्योंकि इसी सम्पर्क से ही उसके स्वार्थों की सिद्धि सम्भव थी। इस सम्पर्क के परिणामस्वरूप ही समाज बना और प्राणी एक सामाजिक प्राणी कहलाने योग्य बन गया।

मानव की स्थापना के साथ ही यह प्रश्न उपस्थित होता है कि व्यक्ति में 'समाज-सेवा' का भाव कैसे उत्पन्न होता है और क्यों उत्पन्न होता है? वे कौन से मनोवैज्ञानिक कारण हैं जो व्यक्ति में इस भावना को जन्म देने की क्षमता रखते हैं? यदि हम ध्यानपूर्वक किसी भी समाज, उस समाज के लोग तथा किसी समाजसेवी का अवलोकन करें तो उसके पीछे हमें कुछ महत्वपूर्ण पहलू अवश्य ही दिखाई देंगे। ये महत्वपूर्ण पहलू इनसे स्पष्ट किए जा सकते हैं। इसके लिए उस व्यक्ति की विशेषता, समाज में व्याप्त परिस्थितियों की विशेषता, सामाजिक प्रेरणाएं एवं किसी एक विशेष व्यक्ति की कोई कमी उत्तरदायी है।

कभी-कभी समाज में कुछ ऐसी स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जिससे संगठित समाज विसंगठित हो जाता है। उसे किसी ऐसे अवलम्बन की आवश्यकता होती है जो उस बिखरे समाज को पुन: संवार सके। अत: ऐसी स्थिति में वह व्यक्ति जिसके अन्दर नेतृत्व की क्षमता, त्याग एवं सहानुभूति की भावना होगी वह आगे आकर समाज को डूबने से बचा लेगा। जब एक बार व्यक्ति किसी ऐसे कार्य को कर लेता है तो पुन: उस क्षेत्र से बाहर निकलना उसके लिए नामुमकिन हो जाता है, और ऐसी स्थिति में वह समाजसेवा को ही अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य मान लेता है।

हर व्यक्ति में एक प्रभुत्व की इच्छा किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि समूह में उसका स्थान सर्वोपरि हो, लोग उसकी आज्ञा मानें, वह समूह में 'स्टार' के पद को ग्रहण करे। इसकी प्राप्ति के लिए वह अपने व्यक्तित्व एवं गुणों को विकसित करता है जो कि उसे सर्वोपरि स्थान दिलाने में सहायक हो। उन गुणों में समाजसेवा का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है, जबकि समाजसेवा के द्वारा समाज के हर व्यक्ति का मन जीत लेना चाहता है, क्योंकि सबके समर्पण के बिना ऐसा होना संभव नहीं।

प्राय: कुछ स्थितियों में देखा जाता है कि कोई व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के समाजसेवा करता है। उसके पीछे उसके हृदय में त्याग, बलिदान, करुणा एवं प्रेम की कहानी छिपी रहती है। यह आवश्यक नहीं है कि हर व्यक्ति में स्वार्थ की भावना ही निहित हो। यदि हम गांधी जी को देखें या अन्य महापुरुषों पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्टत: पायेंगे कि उन महापुरुषों की इस सेवा के पीछे कोई स्वार्थ नहीं था। उनके हृदय में कुछ भावनाएं ही ऐसी थीं जो उनको इन कार्यों के लिए प्रेरित करती थी। परंतु आज के युग में बिना स्वार्थ के समाजसेवा की कल्पना करना बालू में महल बनाने के सदृश्य है।

इन उपरोक्त तथ्यों के बावजूद एक ऐसा तथ्य है जिसका वर्णन मैंने अभी तक नहीं किया है। उसको आपके सामने प्रकट कर रहा हूं। यह कथन किसी साधारण व्यक्ति का नहीं वरन् एक ऐसे विद्वान का है जिसका नाम हम आप सभी जानते हैं। महान विद्वान 'अरस्तू' ने कहा है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यदि हम इस कथन की गहराई में प्रवेश करें तो यह पता चलेगा कि 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है', सह समाज में रहता है तो समाज में रहने के कारण स्वत: ही उसके हृदय में इस भावना का उदय हो जाता है।' मानव जाति की यह विशेषता है कि जिसके प्रति उसके हृदय में अच्छी धारणा बन जाती है वह उसके लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देना चाहता है। किन्तु जिसके साथ उसका कटु सम्बन्ध होता है उसका वह जड़ से समाप्त करने की ठान लेता है। अत: मनुष्य की सामाजिकता उसको समाजसेवा के लिए प्रेरित करती है। कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में व्याप्त कोई कमी उसे समाजसेवा तक खींच ले जाती है। जैसे उदाहरणस्वरूप एक बालक जो कि कार्य को पैरों से करने में अक्षम है और इस कारण वह खेल-कूद में हिस्सा नहीं ले पाता है तो वह स्वयं किसी ऐसे क्षेत्र में सर्वोपरि बनने की कोशिश करेगा जिससे उसकी एक क्षेत्र की कमी दूसरे में पूरी हो जाए। अत: समाजसेवा का एक रूप व्यक्ति की कमी के कारण भी उत्पन्न हो जाता है।

निष्कर्ष स्वरूप यही कहा जा सकता है कि व्यक्ति के हृदय में समाजसेवा कुछ विशेष परिस्थितियों में उत्पन्न होती है। कुछ समय के लिए कहा जाए कि समाजसेवा स्वार्थपूर्ति का एक साधन है तो भी गलत नहीं है। किन्तु यह कहना एकपक्षीय मत होगा। अत: यही कहना तर्कसंगत है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व की विशेष सामाजिक परिस्थितियों एवं प्रेरणाएं तथा दूसरों के लिए उत्सर्ग की भावनाएं ही व्यक्ति के मन में समाजसेवा का भाव उत्पन्न करती है।■

# सूनामी बनाम सूनामी

■ शिवकुमार लोहिया

सूनामी की लहर
बरपा गई कहर
छोड़ गई अभिशप्त
शहर दर शहर
हर अंधेरी रात के
गर्भ में छिपा है
एक सुनहरा सवेरा
रात होती है जब संगीन
सुबह होती है रंगीन
सूनामी लहरों ने
जगाया है मानव की
सुशुप्त मानवता को।
उग रहा है
यत्र तत्र सर्वत्र
सहानभूतियों का
एक नया सूरज
जिसकी भीनी धूप तले
मानव संगठित कर रहा है
अपनी खंडित अस्मिता को
लहरों को चुनौती देते
उमड़ पड़ा है
भावनाओं का ज्वार
उठ रही है सहयोग
एवं भाईचारे की उत्ताल तरंगे
थामे हाथों में हाथ
बढ़ रहे हैं युग पथ चरण
भाषा, संस्कृति, धर्म की
सीमाओं को लांघकर
प्रतिफुटित हो रहा है
मानवीयता का उज्वल आकाश
जिसके तले
उद्घोष हो रहा है-
लहरें तुमने कितनी बार
न जाने कहां-कहां
किया शक्ति का भौंडा प्रदर्शन
पर हमने हमेशा ही
इस चुनौती को स्वीकारा है
हर बार मानव की जीजिवषा ने
सफलता का झंडा फहराया है
धन्यवाद, सूनामी लहरें
तुमने हमें सोते से जगाया है
तुम देख रहे होगे
जो मानवीय सहयोग की
लहरें उठ रही है, क्या
वह भी सूनामी नहीं है?

# सन् २००४ की लीलायें

■ डा. जगदीश लवानिया

बीते वर्ष तेरी बलहारी।
तेरा वार झेल नहीं पाये बड़े-बड़े ब्रह्मचारी।।
किसी किसी के तो क्रोधित हो ऐसी टंगी मारी।
अब तक सीधी हो नहीं पायीं यू.पी. वाली कुंवारी।।
ताज ने रखा ताज उतारी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

दिल्ली के दंगल में देखी दल-दल की दिलदारी।
नामी घोड़े रहे टापते घास किसी को न डारी।।
टल गये अटलित अटल बिहारी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

किन्तु वर्ष सन् चार देव ! तू निकला बड़ा खिलाड़ी।
'जी रिमोट' से चालू 'पगड़ी' गद्दी पर बैठाली।।
मां की सच्ची आज्ञाकारी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

'बीरू' की 'आतंकी मूंछें' कितनी थीं बलधारी।
तीन-तीन सरकारें उनसे लटक-लटक के हारीं।।
एक भी बाल न सकीं उखारी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

पर हो वर्ष चार ! तूने तो किया करिश्मा भारी।
बिना प्लास के खींचे मूंछे हो गईं 'राम पियारी'।
हाथी-हथिनी हुए सुखारी
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

'दूल्हे-दुल्हन' पटाने में तू सबसे रहा अगारी।
दो शतकों से अधिक सैन्चुरी दिल्ली ने ही मारी।।
फिर भी रह गयी बहुत कुवांरी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

वर्ष चार तूने दिखलाई लीला न्यारी-न्यारी।
आचार्यों के आचरणों की खोली बन्द पिटारी।।
'साध्वी' भागी फिरें बेचारी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

जाते-जाते किन्तु बना तू कितना प्रलयंकारी।
तूफानी लहरों ने मारे कितने लाल हजारी।।
उनको श्रद्धांजलि हमारी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

हे भूत वर्ष ! कुछ वर्तमान को समझाना सुविचारी।
'दो हजार सन् पांच' रखे सब को सम्पन्न सुखारी।।
फूले फले राष्ट्र फुलवारी।
बीते वर्ष तेरी बलिहारी।।

# महाराणा प्रताप की स्मृति में कोलकाता की एक प्रमुख सड़क का नामकरण

## प्रताप का जीवन विशुद्ध राष्ट्रभक्ति जगाने में सक्षम : उपराष्ट्रपति शेखावत

२ जनवरी। उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत ने आज एक भव्य समारोह में कोलकाता की एक प्रमुख सड़क इंडिया एक्सचेंज प्लेस का नाम 'महाराणा प्रताप सरणी' करने के शिलापट्ट का उद्घाटन करते हुए अपने ओजपूर्ण भाषण में महाराणा प्रताप के त्याग, तपस्या, शौर्य एवं कुशल रणनीति का वर्णन किया और कहा कि उनका स्मरण किसी भी व्यक्ति के हृदय में देश की स्वाधीनता कीरक्षा हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने की ललक जगाने में समर्थ है। अत: हमें केवल सड़क के नामकरण से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए बल्कि शीघ्र ही चेतक पर सवार उनकी भव्य मूर्ति की भी प्रतिष्ठा करने का संकल्प लेना चाहिए ताकि उनको देखकर हमारी वर्तमान एवं आने वाली पीढ़ियों में विशुद्ध देशभक्ति के भाव उमड़ते रहें। इस कार्य में सब प्रकार का सहयोग देने का भी उन्होंने आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि प्रताप ने भीषण विपरीत परिस्थितियों में भी स्वाधीनता का चिराग जलाए रखा एवं उसी लौ को शिवाजी एवं गुरु गोविंद सिंह ने आगे बढ़ाया। अगर ये तीन महापुरुष नहीं होते तो हमारे देश का इतिहास कुछ अलग होता। इस वर्ष भक्तिमती मीराबाई की भी पंचशती मनाई जा रही है। महाराणा की शक्ति एवं मीरा की भक्ति का संदेश पूरे विश्व में फैलाने की जरूरत है। उन्होंने सुनामी लहरों की त्रासदी से संकटापन्न लोगों की भरपूर सहायता करने का भी सभी से आह्वान किया एवं दान देने तथा हर प्रदेश के लोगों के साथ घुलमिल जाने के राजस्थानियों के गुण को सराहा। श्री शेखावत ने कहा कि अभी तक संसद परिसर में भी प्रताप की मूर्ति नहीं लगी है, अत: हम इसके लिए भी प्रयत्नरत हैं।

*कोलकाता महानगर में महाराणा प्रताप सरणी के नवीन नामकरण के प्रस्तर फलक (पूर्वनाम इंडिया एक्सचेंज प्लेस) का बटन दबाकर उद्घाटन करते हुए भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम भैरोंसिंह शेखावत। सुश्री ममता बनर्जी, सांसद, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री अरुण प्रकाश मल्लावत, श्री सुब्रत मुखर्जी, महापौर, श्रीमती मीनादेवी पुरोहित, उपमहापौर आदि।*

तृणमूल सुप्रीमो सुश्री ममता बनर्जी ने कहा कि राणा प्रताप सभी के वन्दनीय हैं, उनका सम्मान करना हम सभी का कर्त्तव्य है। राजस्थान परिषद की बहुत वर्षों से यह मांग थी कि राणा प्रताप के नाम से कोलकाता शहर में एक पार्क, एक सड़क हो एवं उनकी एक बड़ी चेतक पर सवार मूर्ति भी लगे। दो काम पूरे कर दिये हैं, मूर्ति के लिए भी शीघ्र जगह देख रहे हैं। महापौर श्री सुब्रत मुखर्जी ने कहा कि तृणमूल-भाजपा के बोर्ड ने अपने कार्यकाल में विदेशियों के नाम पर चले आ रहे मार्गों का नाम बदलकर राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक महापुरुषों के नाम पर रखने की दृष्टि से बहुत कार्य किया है।

प्रारंभ में राजस्थान परिषद के उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने महाराणा प्रताप के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। उपमहापौर श्रीमती मीनादेवी पुरोहित ने कहा कि इस सड़क के नामकरण से पूरे देशवासियों का मस्तक गर्व से ऊंचा हुआ है। राजस्थानियों की तो खुशी का पारावार ही नहीं है। मंच पर नगर निगम के अध्यक्ष अनिल मुखर्जी, पार्षद हृदयानंद गुप्त, नगर निगम के कमिश्नर देवाशीष सोम भी उपस्थित थे। मंचस्थ सभी गणमान्य अतिथियों को माल्यार्पण राजस्थान परिषद के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। माननीय उपराष्ट्रपति, मेयर एवं सुश्री ममता बनर्जी का स्वागत उन्हें साफ बांध कर एवं शाल ओढ़ाकर सर्वश्री जुगल किशोर जैथलिया, महावीर प्रसाद नारसरिया, अरुण प्रकाश मल्लावत, सन्दीप भूतोड़िया, परशुराम मूंधड़ा, गोविन्द नारायण काकड़ा, अनुराग नोपानी एवं श्रीमती सुशीला सिंहानिया, श्रीमती शकुन्तला देवी मल्लावत, श्रीमती हीरामणि नागौरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार श्री सच्चिदानंद पारीक ने किया एवं स्वागत गायन प्रस्तुत किया श्री विकास शर्मा ने।

कार्यक्रम में महानगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति, साहित्यकार, विभिन्न नागरिक परिषदों के पदाधिकारीगण एवं अन्य स्थानीय नागरिकगण बड़ी संख्या में मौजूद थे।

इण्डिया एक्सचेंज प्लेस का नाम बदलकर महाराणा प्रताप सरणी किए जाने पर राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री बसुन्धरा राजे ने एक पत्र लिखकर कोलकाता नगर निगम के मेयर सुब्रत मुखर्जी तथा कोलकातावासियों को धन्यवाद दिया है। पत्र में लिखा है कि मेवाड़ के महाराणा प्रताप भारतीय वीरता और बलिदान के प्रतीक हैं। उनके नाम पर कोलकाता के सड़क का नामकरण करना राजस्थानियों के लिए सबसे बड़ा उपहार है।■

# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

## सम्मेलन के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दौरा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने जनवरी के प्रथम सप्ताह में महाराष्ट्र के जालना व औरंगाबाद का सांगठनिक दौरा किया। दोनों ही स्थानों पर काफी बड़ी संख्या में समाज के लोगों ने बैठकों में हिस्सा लिया और सामाजिक प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा की। इस अवसर पर जालना के कर्मठ एवं समर्पित सदस्य श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका एवं संयुक्त महामंत्री श्री राम औतार पोद्दार ने तमिलनाडु के चेन्नई में तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित बैठक में शिरकत की तथा तमिलनाडु की सामाजिक समस्याओं पर विवेचन किया। बैठक में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालकृष्ण गोयनका, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री कैलाशमल दुगड़ एवं प्रान्तीय महामंत्री श्री विजय गोयल उपस्थित थे। तत्पश्चात् दोनों ही मंत्रियों ने कर्नाटक के बंगलोर में आयोजित बैठक में भाग लिया। बैठक में कर्नाटक शाका को सशक्त एवं संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए विस्तृत चर्चा हुई। बैठक के आयोजन में श्री राजा राम शर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

## मारवाड़ी सम्मेलन के शिष्टमंडल की उपराष्ट्रपति से भेंट

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के एक ७ सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत से राजभवन में मुलाकात की। शिष्टमंडल ने उपराष्ट्रपति को सम्मेलन की गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हुए हाल ही में सिलचर में मारवाड़ी व्यापारियों पर हुए हमले के दौरान माल के नुकसान के लिए क्षतिपूर्ति के लिए उनसे असम सरकार से बातचीत करने का अनुरोध किया। श्री शेखावत ने देश में बढ़ती जातिवाद हिंसा पर चिन्ता व्यक्त की। प्रतिनिधि मंडल में निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, इंदरचंद संचेती, रतन शाह, पवन जालान, बंगाल प्रांतीय अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया थे।

## स्थायी समिति की प्रथम बैठक- एक रपट

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक २१ दिसम्बर २००४ को सम्मेलन भवन में सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका द्वारा प्रस्तुत गत बैठक की कार्यवाही सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। रपट में मारवाड़ी सम्मेलन भवन के नवीनीकरण की आवश्यकता पर सदस्यों का ध्यानाकृष्ट किया गया।

२६ दिसम्बर २००४ की प्रात: सम्मेलन के ७०वें स्थापना दिवस समारोह कला मंदिर में मनाये जाने की जानकारी सदस्यों को दी गयी एवं उनसे समारोह में उपस्थित होने का अनुरोध किया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा द्वारा समाज विकास विशेषांक के प्रकाशित किये जाने की भी जानकारी दी गयी।

सदस्य विवरणिका डायरेक्टरी के पुनर्प्रकाशन हेतु गठित उपसमिति के संयोजक एवं सदस्यों की देखरेक में कार्यारम्भ कर दिये जाने से सदस्यों को अवगत कराया गया।

पूर्वोत्तर के सिल्चर शहर में मारवाड़ी व्यवसायियों के दुकानों में हुई लूटपाट एवं आगजनी की घटना पर चिन्ता व्यक्त की गयी एवं सम्मेलन द्वारा तत्काल उठाये गए कदमों से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सदस्यों को अवगत कराया।

महामंत्री श्री सुरेका ने चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार समारोह पश्चिम बंग अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में १२ फरवरी २००५ को बंगला अकादमी सभागार में मनाए जाने के प्रस्ताव की चर्चा की ।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री नन्दलाल रूंगटा, पूर्व अध्यक्ष नन्दकिशोर जालान, बंशीलाल बाहेती, आत्माराम सोंथलिया, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री रामऔतार पोद्दार, रामगोपाल बागला आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तुलस्यान ने सदस्यों से सक्रिय सहयोग एवं सम्मेलन की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने का आह्वान किया।

# ७०वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

## समाज की व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है : श्री संतोष बागड़ोदिया

## संयुक्त परिवार का टूटना चिन्ताजनक : श्री रवि पोद्दार

गुजरते हुए तारीखों का दामन थामें, सफलता-असफलता के अनेकों उतार-चढ़ाव पर अपने पद चिह्नों को पीछे छोड़ते हुए, हर्ष एवं विषाद की अनेकों घड़ियों को आत्मसात् करते हुए अन्ततः अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने ७०वें स्थापना दिवस के द्वार पर आ उपस्थित हुआ- विगत गतिविधियों के आइने में अपनी कामयाबी व नाकामयाबी के अक्श तलाशने, उन पर मंथन करने एवं अगले सफर के लिए आशाओं, आकांक्षाओं, उत्साह एवं उमंगों का सम्भार ग्रहण करने।

*उद्घाटन भाषण देते हुए श्री संतोष जी बागड़ोदिया*

२६ दिसम्बर २००४, कला मंदिर। सांसद एवं सुविख्यात उद्योगपति व समाज सेवी **श्री संतोष बागड़ोदिया** ने 'नये अवसर एवं नयी चुनौतियां' विषयक गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि आज मारवाड़ी समाज की व्यवस्था को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। इसके लिए सामूहिक प्रयत्न होना चाहिए। आज संयुक्त परिवार तो चाहिए, परंतु व्यवस्था में परिवर्तन करना होगा। विकासोन्मुखी दिशा की ओर उन्हें उन्मुख करना होगा। आज के मारवाड़ी समाज के युवा वर्ग तथा बुजुर्ग वर्ग में एक तालमेल की जरूरत है, तभी युवा सिर्फ अपने व्यवसाय में संकुचित न रहकर विभिन्न क्षेत्रों में अपने सहयोग प्रदान कर मारवाड़ी समाज की प्रचलित व्यावसायिक छवि को बदल सकेंगे। आज समाज में जैसे-जैसे अवसर बढ़े हैं चुनौतियां भी बढ़ी हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों को आजादी मिलनी चाहिए। अभिभावक सिर्फ अपने विचार बच्चों पर न थोंपे। यदि बच्चे पर किसी तरह का दबाव रहेगा तो वह अपने मन की बात नहीं कह पायेगा। इस स्थिति में वह कुंठित हो जायेगा। घर के बच्चों को थोड़ी छूट दें आगे बढ़ने की। इनकी सोच को शक्ति दें, प्रोत्साहन दें, तभी वह चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो पायेगा। अवसर के प्रति सकारात्मक सोच रखें। हर पल अवसर हमारे पास है, हमारे बच्चों के पास है। हमें स्वयं भी समझना होगा और बच्चों को भी समझाना होगा। युवा साथियों की सोच और मानसिकता को बदलना होगा, उन्हें प्रोत्साहन देना होगा। आज के जमाने में एक आदमी काम करे तो नहीं चल सकता, बहनों को भी आगे आना होगा। कल्पना चावला भी उनकी तरह एक महिला ही थीं। अपने पर भरोसा रखें और आगे आयें।

श्री बागड़ोदिया ने कहा कि संगठन को मजबूत बनाने के लिए सिर्फ पैसा ही नहीं भावना और सहयोग की भी जरूरत है। सहायता लेने के लिए सहायता देने की हिम्मत भी होनी चाहिए। एक दूसरे के लिए मन में अच्छी बात जब तक नहीं आयेगी तब तक समाज को आगे नहीं बढ़ा सकेंगे। घर में आप समाज की बात करते हैं, परंतु बाहर में उसी समाज का विरोध करते हैं। इससे समाज में संगठन कैसे बनेगा? उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज राजस्थान से आगे निकलकर हरियाणा को भी जोड़े तो यह समाज एक व्यापक समाज हो जायेगा। समाज के लिए उनकी जहां भी जब भी आवश्यकता पड़ेगी वे अवश्य जायेंगे।

*मुख्य अतिथि श्री रवि पोद्दार समारोह को सम्बोधित करते हुए*

श्री बागड़ोदिया ने कहा कि राजनीति में आगे आने के लिए दब्बूपन की मानसिकता से बाहर निकलना होगा। आपमें से, हममें से कोई प्रधानमंत्री भी बन सकता है, असंभव नहीं है, पर वही बन सकता है जिनमें चुनौतियों की सामना करने की क्षमता हो, अतः अपने अन्दर क्षमता जागृत करें। अपने सहयोग से समाज के भाई-बहनों को राजनीति में आगे बढ़ाने की कोशिश करें। आज तक एक भी केबिनेट ऐसा नहीं बना जिसमें मारवाड़ी न हो। श्री शीशराम ओला वर्तमान में एक मारवाड़ी कैबिनेट मिनिस्टर हैं। मारवाड़ी समाज को सिर्फ व्यावसायिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, राजनीति, खेलकूद जैसे विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़कर अपना योगदान करना चाहिए, क्योंकि चुनौतियां सभी जगह हैं चाहे वह खेल का मैदान हो, स्कूल-कालेज जैसे पढ़ाई लिखा का क्षेत्र हो, राजनीतिक क्षेत्र हो या समाज सेवा का ही क्षेत्र क्यों न हो? सत्य की राह के लिए कोई शार्टकट नहीं है। सपना तो कभी ऊंचा है, बड़ा है, लेकिन उसके लिए उस काम में जिन्दगी लगानी पड़ती है। चुनौतियां आती रहेंगी। हमें आगे बढ़ने के लक्ष्य को कभी ओझल नहीं होने देना है।

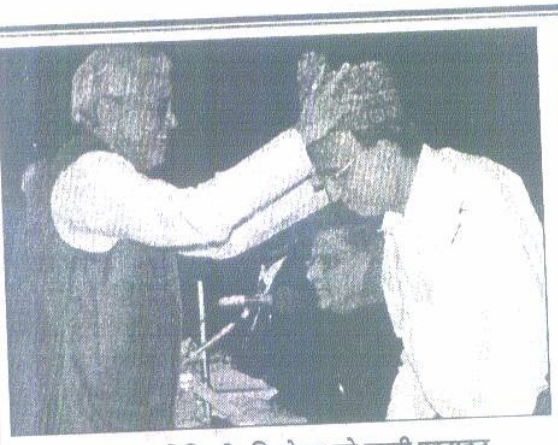

*मुख्य अतिथि श्री रवि पोद्दार को पगड़ी पहनाकर उनका सम्मान करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।*

*सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान समारोह को उद्‌बोधित करते हुए*

समारोह के मुख्य अतिथि **श्री रवि पोद्दार** ने कहा कि मारवाड़ी समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा बहुत पुरानी है, लेकिन यह परम्परा भी धीरे-धीरे टूट रही है। आज परिवार बिखर गये हैं। आज समाज के लोग हम दो हमारे दो की नक्काशी पर चल रहे हैं। यह हमारी उन्नति व प्रगति पर बाधक साबित हो रहा है। एक समय था जब 'वसुधैव कुटुम्बकम' धारा पर चलते थे। आज दरकार है एक होने की। एक दूसरे का हाथ थामकर आगे बढ़ने की। आज समाज के लोगों की जीवन शैली तेजी से बदल रही है। एक जमाने में लोगों की जीवन शैली सादगी से भरपूर थी। आज लोग दिखावे में चले गये हैं। समाज में हर तरफ दिखावा एवं प्रदर्शन का बोलबाला हो गया है। आज हम अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए, दिखावे के लिए प्रतिद्वंद्विता में बहकर अधिक से अधिक खर्च करना चाहते हैं और स्वयं को कर्जदार बना लेते हैं। दिखावे में न बहें तथा दूसरों को न देखकर अपनी हैसियत के अनुसार खर्च करें। समाज के लिए कुछ करना है यह सोचना सबका फर्ज है। दान की भावना आज भी मारवाड़ी समाज में है। हमारा ध्येय हो कि जितने भी सम्पन्न व्यवसायी है उन्हें अपने से जोड़ें। आज के दिन सबसे बड़ी चुनौती मारवाड़ी समाज और व्यवसायी के सामने हैं कि वे बीते दिनों की प्रवृत्ति से उबरकर नये अवसर का लाभ उठायें, नयी चुनौतियों का सामना करें। मानवीय व सामाजिक मूल्यों में विघटन ही आज की सबसे बड़ी चुनौती है। एक समय बंगाल में व्यवसायी वर्ग बहुत मुश्किल से गुजरा है। अब यहां की सरकार की विचारधारा में परिवर्तन आया है। मुख्यमंत्री श्री बुद्धदेव भट्टाचार्य राज्य के विकास में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। इस कार्य में मारवाड़ी समाज को भी उनका सहयोग करना चाहिए, सरकार की मानसिकता में आयी काफी बदलाव और बदलती परिस्थितियों का पूरा लाभ उठाना चाहिए। यह उद्योग जगत व सरकार दोनों के लिए फायदेमंद साबित होगा।

समाज कल्याण की भावना को जागृत करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए श्री पोद्दार ने कहा कि संस्थाओं को पैसा तो मिलता है पर उसका सही निरूपण नहीं हो पाता है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन सभापति **श्री मोहनलाल तुलस्यान** ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि मारवाड़ी समाज ने सेवा की मिशाल कायम की थी, सेवा व दान के क्षेत्र में मारवाड़ी समुदाय ने काफी ख्याति अर्जित की थी, लेकिन अब वे उपभोक्ता संस्कृति से प्रभावित होकर सेवा व परोपकार की भावना से परे हट रहे हैं। सम्मेलन वैचारिक मंच है और इस मंच से सेवा का संकल्प लेना होगा। मारवाड़ी समुदाय के लोग हर क्षेत्र में आगे होने के बावजूद पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हो रहे हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित शिक्षा के साथ अच्छा संस्कार भी

*समारोह के उद्‌घाटनकर्ता श्री संतोष बागड़ोदिया को पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत करते हुए समारोह के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान।*

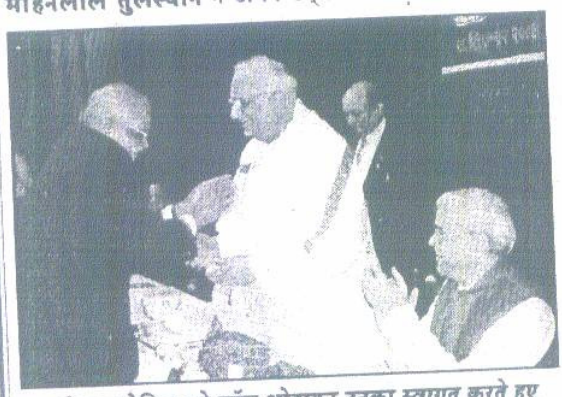

*श्री बागड़ोदिया को शॉल ओढ़ाकर उनका स्वागत करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।*

जरूरी है। सामाजिक व मानवीय मूल्यों में हो रहे विघटन पर चिन्ता जताते हुए श्री तुलस्यान ने कहा कि बड़ों के लिए सम्मान का भाव कम होता जा रहा है। समाज के बुजुर्गों ने अपनी-अपनी मेहनत तथा त्याग से समाज में जो सम्मान हासिल किया था, उसे कायम रखते हुए समाज के लोग आगे बढ़ें। फिजूलखर्ची, दिखावा व आडम्बर को रोकने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि समाज के लोग सादगी अपनाकर आगे बढ़ें। विवाह में दिखावा व प्रदर्शन बंद करें। सामाजिक कार्यों के लिए वैभव का प्रदर्शन अच्छी बात नहीं है। मारवाड़ी समुदाय को इससे बचना होगा तथा सामाजिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना होगा। मारवाड़ी समुदाय अपने पुराने आदर्शों व परम्पराओं को न छोड़े और अपनी विश्वसनीयता बनाये रखें।

इसके पूर्व सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री **श्री भगीराम सुरेका** ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के ६९वें स्थापना दिवस समारोह से लेकर आज तक के सम्मेलन की गतिविधियों की जानकारी अपने प्रतिवेदन में दी। श्री सुरेका ने अपने प्रतिवेदन में ९,१० एवं ११ जनवरी २००४ को मुंबई में अति सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए १९वां राष्ट्रीय अधिवेशन की विस्तृत चर्चा की।

सम्मेलन का परिचय देते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि आज से ७० साल पहले १९३५ में जब

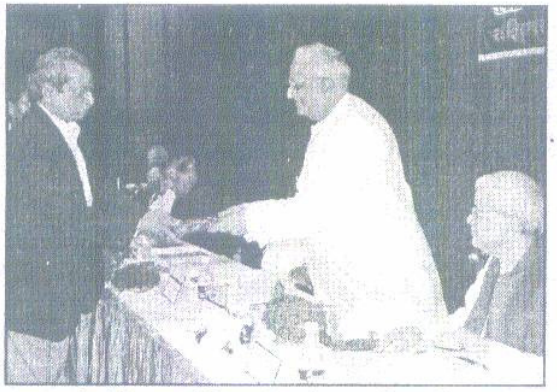

*श्री संतोष बागड़ोदिया को सम्मेलन साहित्य भेंट करते हुए श्री आत्माराम सोंथालिया।*

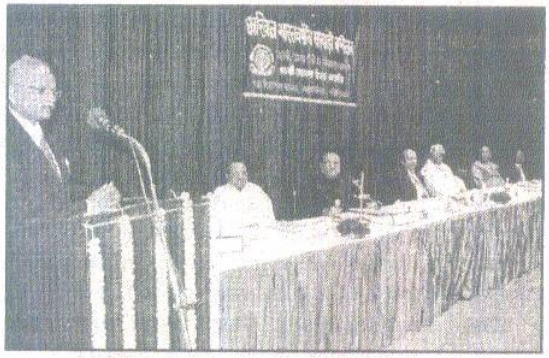

*अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया*

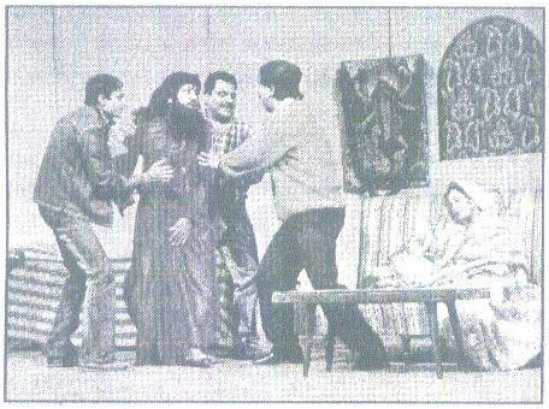

*'दालभात में मूसरचन्द' नाटक का एक रोमांचक दृश्य*

हमारे पूर्वजों ने इस संस्था की स्थापना की थी उस समय भिन्न परिस्थितियां थी। उन्हें कई तरह की परेशानियों का सामना करना

*कार्यक्रम का लुत्फ उठाते हुए दर्शकवृन्द*

पड़ा था। समाज में कई प्रकार की कुरीतियां व्याप्त थीं- घूंघट प्रथा, नारी शिक्षा एवं विधवा विवाह के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, मृतक बिरादरी भोज आदि। हमारे दूरदर्शी पूर्वजों ने आने वाले समय का सठिक अंदाजा लगाते हुए इन कुरीतियों का विरोध किया। घर-घर में घुसकर उन्होंने हमारी माताओं और बहनों के घूंघट हटाये। बालिकाओं को विद्यालय भेजने तथा विधवा विवाह के समर्थन में व्यापक आन्दोलन किये। इसके लिए उन्हें समाज से गालियां सुननी पड़ीं एवं यहां तक की लाठियां भी खानी पड़ी। आज हमारे सम्मुख उन आन्दोलनों का एक सुखद तस्वीर उपस्थित है। आज समाज की बहनें और बेटियां स्कूलों और कालेजों में पढ़ाती हैं, उच्च ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों में, शोध केन्द्रों में, अदालतों में, अस्पतालों में, दफ्तरों, उद्योग-धंधों के संचालन में अपनी अभूतपूर्व काबलियत का परिचय दे रही हैं। स्त्रियों के लिए आजीवन वैधव्य की विवशता तथा पर्दे का बंधन अब नहीं है। उनमें जीवन के मूल्यों के प्रति नये दृष्टिकोण का आविर्भाव हुआ है। श्री शर्मा ने कहा कि आज मारवाड़ी समाज में एक भारी बदलाव आया है कुछ शुभ, कुछ अशुभ। खूबियों के साथ खामियां ने भी जन्म ली

है। शिक्षा, साहित्य, संस्कृति के साथ-साथ व्यवसाय उद्योग में हमारी प्रगति एक सुखद बदलाव है, लेकिन सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट चिन्ता का विषय है। आज नारियों के एक विशेष वर्ग में स्वतंत्रता ने स्वच्छन्दता का रूप ले लिया है। एक समय पर्दा हटाने के लिए आन्दोलन किये गये थे और अब परिस्थिति यह है कि 'कुछ तो पर्दा करो' कहना पड़ता है। हम सामाजिक कुरीतियों के चंगुल से स्वतंत्र नहीं हो पा रहे हैं। सम्मेलन एक वैचारिक संस्था है जो समाज को हर समय हर क्षेत्र में और हर स्तर पर नये परिवर्तनों के अनुसार अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का युग बोध कराता रहा है। समाज सुधार एवं सामाजिक परिवर्तन एक निरन्तर प्रक्रिया है जिसके नतीजे कई-कई दशकों के बाद परिलक्षित होते हैं। उस समय जो निर्देश हमारे पूर्वजों ने हमें दिया था उसका पालन हो तो कई समस्याओं का निदान हो जायेगा। हमारे संस्थापक अध्यक्ष ने समरसता अपनाने की सबक दी थी। यदि आज हम इसी राह पर चलें तो हमें कोई समस्या नहीं होगी। दुःख का विषय है कि हमारा समाज व्यापार के क्षेत्र में भी पिछड़ता जा रहा है। जहां पहले देश के १० उद्योगपतियों में से ५ मारवाड़ी होते थे वहीं अब सिर्फ एक ही व्यक्ति इस समुदाय से है। वह भी नये उद्योगपति। पुराने उद्योगपति पिछड़ गये हैं। उद्योगपतियों को सूचना व प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करना चाहिए, तभी अस्तित्व सुरक्षित रहेगा।

झारखंड प्रांतीय सम्मेलन के श्री विनोद अग्रवाल ने कहा कि मारवाड़ी समाज की जिम्मेवारी है कि वह देश की गरीबी और साम्प्रदायिकता के खिलाफ मुखर होकर आन्दोलन चलाये, इसी से हमारी सदियों की पहचान कायम रहेगी।

समारोह का उद्घाटन श्री बागड़ोदिया द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। सुप्रसिद्ध गायक श्री विट्ठल दबे द्वारा गणेश वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात अतिथियों के सम्मान क्रम में आज के कार्यक्रम के प्रधान वक्ता श्री बागड़ोदिया एवं मुख्य अतिथि श्री रवि पोद्दार का माल्य, मारवाड़ी पगड़ी, शॉल एवं साहित्य प्रदान कर स्वागत किया गया। अन्य अतिथियों के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान का भी माल्य विभूषित कर स्वागत किया गया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा द्वारा सम्पादित सम्मेलन का मासिक मुखपत्र समाज विकास विशेषांक का विमोचन माननीय मुख्य अतिथि श्री रवि पोद्दार के कर-कमलों से किया गया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने आगत अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए उपस्थित राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं शाखाओं के पदाधिकारीगण व सदस्यवृंदों, मीडिया व प्रेस कर्मियों आदि को धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री कानोड़िया ने समाज के युवकों में बढ़ती बेरोजगारी पर चिन्ता व्यक्त की एवं इसके लिए सम्मेलन को कार्यक्रम हाथ में लेने की बात कही। श्री कानोड़िया ने परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह के माध्यम से विवाहों में सादगी की बात कही।

मंचासीन पूर्व अध्यक्ष सर्वश्री नन्दकिशोर जालान, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री रामअवतार पोद्दार, बंगाल प्रांत के अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया के अतिरिक्त समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज करने वालों में प्रमुख थे- पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री रतन शाह, पूर्व महामंत्री दीपचंद नाहटा, कार्यकारिणी सदस्य सूर्यकरण सारस्वा, प्रेमचंद सुरेलिया, आत्माराम सोंथलिया, जुगलकिशोर जैथलिया, ओमप्रकाश अग्रवाल, राजेन्द्र खण्डेलवाल, सुभाषचन्द्र अग्रवाल, सुभाष मुरारका आदि।

कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने किया।

समारोह का समापन श्री पुण्य दर्शन गुप्ता द्वारा निर्देशित हिन्दी हास्य नाटक 'दाल भात में मूसरचंद' के मंचन से हुआ।

# बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

## मुजफ्फरपुर शाखा

**२५.१२.०४ सम्मेलन नगर शाखा मुजफ्फरपुर द्वारा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का ७०वां स्थापना दिवस समारोह प्रमण्डलीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम बाजोरिया की अध्यक्षता में मनाया गया। जिसमें प्रदेश अध्यक्ष डा. रमेश केजड़ीवाल, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री रामजी प्रसाद भरतीया, प्रान्तीय महामंत्री किशोरी लाल अग्रवाल, सांसद परमेश्वरलाल केजड़ीवाल, फतेह चन्द चौधरी, नन्दकिशोर डोलिया, काशी प्रसाद हिसारिया आदि उपस्थित थे। इसके पूर्व मुजफ्फरपुर गोशाला में जाकर गायों को गुड़ एवं चोकर खिलाया गया।**

## पटना : हत्या के विरोध में कड़ा निन्दा प्रस्ताव

पटना में डा. नवल किशोर अग्रवाल की हत्या की घटना पर तीखा रुख अपनाते हुए बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष डा. रमेश केजड़ीवाल के दिशा-निर्देशन पर स्थानीय सदस्यों की एक बैठक बुलाकर निन्दा प्रस्ताव पारित किया गया। उन्होंने बताया कि आये दिन घटनायें बढ़ती जा रही हैं हमें इन सारी घटनाओं को रोकने के लिए रणनीति तय करने की आवश्यकता है। सभी सदस्यों ने व्यवसायी संघ के हड़ताल का समर्थन किया। उल्लेखनीय है कि कदमकुआ बुद्ध मूर्ति के समीप डा. अग्रवाल के निजी मेहना क्लीनिक में मरीज दिखाने के बहाने पहुंच कर अपराधियों ने दिपावली के दिन डा. अग्रवाल एवं कम्पाउंडर अरविन्द कुमार को गोलियों से छलनी कर दिया। बाद में उन दोनों की अस्पताल में मृत्यु हो गई।

## जमालपुर : वधू प्रताड़ना के विरुद्ध में सामूहिक आवाज उठाने की आवश्यकता

घटना जमालपुर की है जहां लड़की के पिता श्री दामोदर प्रसाद सुलतानिया, झाझा को धोखे में रखकर जमालपुर के श्री काशी प्रसाद मेहनसरिया ने मृत्यु मुख में बैठे अपने पुत्र मनीष की डाक्टर द्वारा शादी न करने की चेतावनी देने के उपरांत भी राधा से शादी कर दी और दो साल पूरा होने के बाद ही वधू को वैधव्यवेदना झेलने को विवश कर दिया। अपने छोटे पुत्र से विधवा वधू का

पुनर्विवाह कर देने के वचन को पूरा करने की जगह मृत पुत्र एवं वधू की पाई-पाई हड़प कर उसे उसकी एक वर्षीय पुत्री के साथ प्रताड़ित कर घर से भगा देने का जघन्य कार्य किया है। इस घटना से आहत महिला सम्मेलन की बिहार प्रांत की अध्यक्षा श्रीमती मीना गुप्ता ने सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान को अवगत कराया। श्री तुलस्यान ने तत्काल कदम उठाते हुए घटना का विस्तृत ब्यौरा बिहार प्रांत के अध्यक्ष डॉ. रमेश केजड़ीवाल को भेजा एवं आवश्यक कदम उठाने का निर्देश दिया है। प्रांतीय महामंत्री श्री रामावतार पोद्दार ने अविलम्ब कार्यवाही करते हुए मृतक के पिता को पत्र देकर राधा के प्रति सहानुभूतिपूर्वक अनुकूल निर्णय लेने का अनुरोध किया है, परन्तु श्री महेनसरिया ने श्री पोद्दार के पत्र का कोई भी जवाब अभी तक नहीं दिया है। श्रीमती मीना गुप्ता ने अमेरिका में रह रहे श्री महेनसरिया के छोटे पुत्र श्री नीधिर को पत्र देकर उसके पिता के दिए हुए वचन को पूरा करने हेतु राधा को पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेने का अनुरोध किया है, परन्तु इस पत्र का भी अभी तक कोई जवाब उन्हें उपलब्ध नहीं हो पाया है। मामला समाज के सम्मुख विचाराधीन है।

## चनपटिया : अग्रसेन जयन्ती सह मेंहदी प्रतियोगिता सम्पन्न

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की चनपटिया शाखा द्वारा समाज प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन की जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। समारोह की अध्यक्षता शाखा अध्यक्ष श्री सत्यनारायण रूंगटा ने की। संचालन वरिष्ठ कवि एवं लेखक युगलकिशोर चौधरी ने किया। वक्ताओं में वरीय समाजसेवी रामनिवास रूंगटा, शाखा मंत्री श्यामसुन्दर तुलस्यान, महिला मंच की सचिव श्रीमती वीणा देवी तुलस्यान एवं युगलकिशोर चौधरी ने अग्रसेन जी को समाजवाद की अवधारणा प्रस्तुत करने वाला इतिहास पुरुष बताया। इस अवसर पर महिल मंच द्वारा मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, विजेताओं को प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार प्रदान किये गये।

## पटना : 'पधारो म्हारो देश' कार्यक्रम आयोजित

२५.१२.०४ सम्मेलन की पटना नगर शाखा द्वारा 'पधारो म्हारे देश' कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बनजारा और कालवेलिया जैसे दुर्लभ लोक नृत्यों और लुप्त होती जा रही कठपुतली कला को जयपुर से पधारे १० कलाकारों द्वारा प्रस्तुत की गई। आयोजन स्थल की विशेष साज-सज्जा और सदस्यों के सिर पर बंधी चुनड़िया पगड़ी राजस्थानी परिवेश प्रस्तुत कर रही थी। व्यंजन के स्टालों पर राजस्थानी मिठाई का आनंद लोगों ने भरपूर उठाया। फैन्सी ड्रेस एवं नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रतियोगियों ने अपनी मौलिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। समारोह का उद्घाटन संस्था के नवनिर्वाचित प्रादेशिक अध्यक्ष श्री कैलाश प्र. झुनझुनवाला ने शांति के प्रतीक सफेद ५ कबूतरों को उड़ाकर किया। स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में श्री लक्खी प्र. शर्मा एवं शिव प्रसाद जी मोदी को सम्मानित किया गया।

# प्रांतीय अधिकारियों का सांगठनिक दौरा

## पहला दौरा

दिनांक २३.१०.२००४ से ३१.१०.२००४ तक मुंगेर प्रमंडल की १७ शाखाओं का दौरा प्रांतीय अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल के दिशा-निर्देश पर श्रीरामजी भरतिया, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री जयदेव प्रसाद नेमानी, प्रांतीय संगठन संयोजक श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, मुंगेर प्रमंडल के उपाध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारी द्वारा सम्पन्न किया गया।

## बख्तियारपुर शाखा

दिनांक २३.१०.२००४ को बख्तियारपुर शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री जीवनलाल लोहिया ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

शाखा अध्यक्ष- श्री जीवनलाल लोहिया, उपाध्यक्ष- श्री पृथ्वीराज अग्रवाल, मंत्री- श्री सुरेश कुमार लोहिया, सं. मंत्री- श्री अजय कुमार लोहिया, कोषाध्यक्ष- श्री संजय कुमार लोहिया, प्रा. स. स. - श्री सुरेश कुमार लोहिया।

कार्यकारिणी सदस्य - सर्वश्री पुरुषोत्तम लाल लोहिया, सजन कुमार लोहिया, राम शरण पंसारी, सुनील कुमार पंसारी, ओम प्रकाश अग्रवाल, संतोष कुमार लोहिया।

## बाढ़ शाखा

२३.१०.२००४ को श्री बलभद्र प्रसाद केजड़ीवाल की अध्यक्षता में बाढ़ शाखा की बैठक हुई। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

शाखा अध्यक्ष- श्री रामौतार प्रसाद केडिया, उपाध्यक्ष- श्री भुवनेश्वर प्रसाद केडिया, मंत्री- श्री राजकुमार भुतिया, स. मंत्री- श्री महेश कुमार झुनझुनवाला, कोषाध्यक्ष- श्री अरुण कुमार भालोटिया, प्रा.स.स.- श्री अनूप कुमार सिंघानिया, कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री हरिलाल अग्रवाल, ओम प्रकाश जिवराजिका, कृष्णा गोपाल भालोटिया, मोहनलाल भालोटिया, लक्ष्मण कुमार केजड़ीवाल, गौरी शंकर मोदी, बाल कृष्ण भूतिया।

## बरविघा शाखा

दिनांक २४.१०.२००४ को बरविघा शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री मोहनलाल गिगलानियां ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

शाखा अध्यक्ष- श्री राम गोपाल छापड़िया, उपाध्यक्ष- श्री पवन कुमार डोकानिया, मंत्री- श्री श्रवण कुमार छापड़िया, सं. मंत्री- श्री अनिल कुमार गिगलानिया, उत्तम कुमार छापड़िया, सीताराम छापड़िया, मनीष कुमार छापड़िया, राधेश्याम गिगलानिया, श्याम सुन्दर कानोड़िया, प्रशोत्तम लाल अग्रवाल, गोपाल कुमार डोकानिया।

## शेखपूरा शाखा

२४.१०.२००४ को शेखपूरा शाखी की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री लक्ष्मी नारायण झुनझुनवाला ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

शाखा अध्यक्ष : श्री संतुष कुमार अग्रवाल, उपाध्यक्ष- श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, मंत्री- श्री सुशील कुमार झुनझुनवाला, सं. मंत्री- श्री अजय कुमार झुनझुनवाला, कोषाध्यक्ष- श्री लक्ष्मी नारायण झुनझुनवाला, प्रा. स. स.- श्री संतोष कुमार अग्रवाल। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री रामु प्रसाद मुरारका, प्रभु दयाल झुनझुनवाला, काशी प्र. झुनझुनवाला, राजेन्द्र प्र. झुनझुनवाला, मोहन लाल मुरारका, ओम प्रकाश अग्रवाल, गिरधारी लाल अग्रवाल, राजेन्द्र प्रसाद सिंघानिया।

## वारसलीगंज शाखा

२५.१०.२००४ को वारसलीगंज शाखा की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री परमेश्वर जाजू ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

शाखा अध्यक्ष- श्री परमेश्वर लाल जाजू, उपाध्यक्ष- श्री नन्दकिशोर जैन, मंत्री- श्री पवन कुमार बंका, सं. मंत्री श्री सुरेश कुमार सुल्तानिया, कोषाध्यक्ष- श्री विनोद कुमार जालान, प्रा.स.स. - श्री पवन कुमार बंका

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री काशी प्र. डोलिया, रवि कुमार अग्रवाल, उमेश पाडिया, कन्हैया कुमार तम्बाकूवाला, सुभाष चन्द्र अग्रवाल, सज्जन कुमार बंका, महेश कु. सुल्तानिया, देवकी नंदन कमलिया, सुनील कुमार सुल्तानिया, प्रवीण कुमार तुलस्यान।

## नवादा शाखा

२५.१०.२००४ को नवादा शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री शिव प्रसाद शर्मा ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

शाखाध्यक्ष- श्री ललित कुमार अग्रवाल, उपाध्यक्ष- श्री रमेश कुमार परसरामपुरिया, मंत्री- श्री अनिल कुमार परसरामपुरिया, स. मंत्री- श्री रोहित कुमार परसरामपुरिया, सं. मंत्री- श्री विनय कुमार अग्रवाल, कोषाध्यक्ष- श्री दिनेश कुमार परसरामपुरिया, प्रा. स.स. श्री गोपाल बोहरा, कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री पंकज कुमार अग्रवाल, अमित कुमार बोहरा, श्याम कुमार परसरामपुरिया, रितेश कुमार अग्रवाल, सुनील कुमार अग्रवाल, राजेश कुमार परसरामपुरिया, राकेश कुमार अग्रवाल, संदीप दास अग्रवाल।

## जमुई शाखा

२६.१०.२००४ को जमुई शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री छेदीलाल बोहरा ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये :-

शाखाध्यक्ष - श्री बाल किशन भालोटिया, उपाध्यक्ष- श्री पारसनाथ बंका, उपाध्यक्ष- श्री भवती प्र. वालोदिया, मंत्री श्री मनोज कु. बोहरा, कोषाध्यक्ष- श्री कुंज बिहारी बंका, प्रा.स.स.- श्री बलभद्र शर्मा, कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री रामकृष्ण भालोटिया, श्याम सुन्दर भालोटिया, अशोक कुमार बोहरा, उमाशंकर भालोटिया, शिव प्रकाश बोहरा, सुशील कुमार लाठ, सजन कुमार बोहरा, सुशील कुमार भालोटिया।

## झाझा शाखा

२६.१०.२००४ को झाझा शाखा की बैठक हुःई। अध्यक्षता श्री राधेश्याम बंका ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

शाखाध्यक्ष- श्री सीताराम पोद्दार, उपाध्यक्ष- श्री सजन कुमार बंका, मंत्री- श्री कैलाश कुमार अडुकिया, स. मंत्री- श्री मनोज कुमार बंका, कोषाध्यक्ष- श्री पवन कुमार सुल्तानिया, प्रा.स.स.- श्री सीताराम पोद्दार। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री देवी प्रसाद सुल्तानिया, पवन कुमार चौधरी, दिलीप कुमार चौधरी, ललित कुमार जालान, विश्वना प्र. सुल्तानिया पदमा नन्द शर्मा, सजन कुमार जालान, श्याम सुन्दर शर्मा।

## लक्खिसराय शाखा

२७.१०.२००४ को लक्खिसराय शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री राम गोपाल ड्रोलिया ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

शाखाध्यक्ष- श्री रामगोपाल ड्रोलिया, उपाध्यक्ष- श्री पवन कुमार ड्रोलिया, मंत्री- श्री श्याम बिहारी चौधरी, सं. मंत्री- श्री रितेश कुमार बंका, सं. मंत्री- श्री सुरेश कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष- श्री ललित कुमार टिबड़ेवाल, प्रा. स.स.- श्री राम गोपाल ड्रोलिया। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री कैलाश प्रसाद/दारूका, कृष्ण कुमार कानोड़िया, प्रवीण कुमार ड्रोलिया, सुशील कुमार सिंघानिया, अरुण कुमार गोयल, अशोक कुमार राजगढ़िया, ललित कुमार बंका, शैलेश कुमार तुलस्यान, वासुकी नाथ वर्मा, युगल किशोर शर्मा, संतोष कुमार मुसदी, गोविन्द प्रसाद खेतान गोपाल प्रसाद ड्रोलिया।

## सूर्यगढ़ा शाखा

२७.१०.२००४ को सूर्यगढ़ा शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री नन्द किशोर अग्रवाल ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये :-

शाखाध्यक्ष- श्री राम जीवन प्र. अग्रवाल, उपाध्यक्ष- श्री भोला राम अग्रवाल, उपाध्यक्ष- श्री सतीश प्र. कटारूका, मंत्री- श्री दिलीप कुमार लुहारूका, सं. मंत्री- श्री गिरधारीलाल शर्मा, सं. मंत्री- श्री पवन कुमार केडिया, कोषाध्यक्ष- श्री श्रवण कुमार अग्रवाल, प्रा.स.स.- श्री कृष्ण कुमार केडिया। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री- रामचन्द्र प्र. अग्रवाल, दिलीप कुमार अग्रवाल, संजय कुमार अग्रवाल, शिव कुमार जोशी, दिनेश कुमार नारनोली, सुमन कुमार अग्रवाल, सोनू कुमार अग्रवाल, गोपाल कुमार अग्रवाल, रवि कुमार अग्रवाल, संजय कुमार केडिया, सुनील कुमार अग्रवाल।

## जमालपुर शाखा

२७.१०.२००४ को जमालपुर शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री छेदीलाल खेतान ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

शाखाध्यक्ष- श्री अशोक कुमार मेहाड़िया, उपाध्यक्ष- श्री गिरजा शंकर शर्मा, उपाध्यक्ष- श्री पुरनमल पंसारी, मंत्री- श्री अरुण कुमार संघई, सं. मंत्री- श्री संजीव कुमार फिटकिरीवाला, सं. मंत्री- श्री चन्द्रशेखर खेतान, कोषाध्यक्ष- श्री रतनलाल अग्रवाल, प्रा. स.स. - श्री अरविन्द कुमार जालान। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री गोपी राम संधई, अशोक कुमार मेहारिया, हरि प्रसाद अग्रवाल, संजय कुमार मेहारिया, विम कुमार शर्मा, शंकर लाल शर्मा, ज्योति कुमार खेमका।

## वरियाड़पुर शाखा

२८.१०.२००४ को वरियाड़पुर शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री सीताराम सवांरिया ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

शाखाध्यक्ष- श्री महेश प्रसाद नारनोली, उपाध्यक्ष- श्री मनोज कुमार छापड़िया, उपाध्यक्ष- श्री गोपाल कुमार टिबड़ेवाल, मंत्री- श्री संजय कुमार सांवरिया, सं. मंत्री- श्री सूरज कुमार नारनोली, कोषाध्यक्ष- श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, प्रा.स.स.- श्री हरि ओम छापड़िया। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री सीताराम सांवरिया, राम किशन सांवरिया, श्याम लाल महाराज, विरेन्द्र कुमार सरावगी, मनोज कुमार सांवरिया, राम कृष्ण सरावगी, गोपी कृष्ण अग्रवाल, कुणाल कुमार नारनोली, गणेश कुमार नारनोली, विजय कुमार टिबड़ेवाल।

## हवेली खड़गपुर शाखा

२८.१०.२००४ को हवेली खड़गपुर शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री कृष्ण कुमार भीमसेरिया ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

शाखाध्यक्ष- श्री कुंजबिहारी प्रसाद टिबड़ेवाल, उपाध्यक्ष- श्री राज कुमार पोद्दार, मंत्री- श्री सुरेश प्रसाद टिबड़ेवाला, सं. मंत्री- श्री सुरेश कुमार बाजोरिया, कोषाध्यक्ष- श्री श्याम सुन्दर टिबड़ेवाल, प्रा.स.स.- श्री श्याम बिहारी टिबड़ेवाल। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री कृष्ण कुमार भीमसरिया, सत्यनारायण अग्रवाल, सुभाष कुमार पोद्दार, दिनेश कुमार बाजोरिया, राम कुमार सिंघानिया, विजय कुमार टिबड़ेवाल।

## तारापुर शाखा

२९.१०.२००४ असरगंज शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री गंगा राम खेतान ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

शाखाध्यक्ष- श्री अनिल कुमार खेतान, उपाध्यक्ष- श्री राधेश्याम केशान, मंत्री- श्री मनोज कुमार केजड़ीवाल, सं. मंत्री- श्री सुनील कुमार केजड़ीवाल, कोषाध्यक्ष- श्री संजय कुमार डिडवानिया, प्रा.स.स.- श्री गंगा राम खेतान। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री श्रवण कुमार केजड़ीवाल, लोकनाथ डिडवानिया, मोहनलाल सर्राफ, शुभ करण सर्राफ, सजन कुमार केडिया, अमन कुमार खेतान, आनन्द कुमार अग्रवाल, आलोक कुमार खेतान, राजेश कुमार केजड़ीवाल, जगदीश प्रसाद केजड़ीवाल।

## असरगंज शाखा

२९.१०.२००४ असरगंज शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री गंगा राम खेतान ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये

शाखाध्यक्ष- श्री अनिल कुमार खेतान, उपाध्यक्ष- श्री राधेश्याम केशान, मंत्री- श्री मनोज कुमार केजड़ीवाल, सं. मंत्री- श्री सुनील कुमार केजड़ीवाल, कोषाध्यक्ष- श्री संजय कुमार डिडवानिया, प्रा.स.स.- श्री गंगा राम खेतान। कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री श्रवण कुमार केजड़ीवाल, लोकनाथ डिडवानिया, मोहन लाल सर्राफ, शुभ करण सर्राफ, सजन कुमार केडिया, अमन कुमार खेतान, आनन्द कुमार अग्रवाल, आलोक कुमार खेतान, राजेश कुमार केजड़ीवाल, जगदीश प्रसाद केजड़ीवाल।

## मुंगेर शाखा

२९.१०.२००४ को मुंगेर शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री महावीर प्रसाद जैन ने की। सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि मुंगेर शाखा का नया चुनाव आगे किसी भी दिन कराया जाएगा। प्रमंडलीय उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने आह्वान किया कि हम सभी भाई एक हो इसका हम सभी संकल्प लें। हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि हम सभी मिलकर अपने समाज में आ रही कमी को दूर करें।

## बड़हिया शाखा

३०.१०.२००४ को बड़हिया शाखा की बैठक हुई। अध्यक्षता श्री शुभकरण भीमसेरिया ने की। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये :-

शाखाध्यक्ष- श्री शुभकरण भीमसेरिया, उपाध्यक्ष- श्री कृष्ण कुमार खेमका, मंत्री- श्री विजय साहेबाल, सं. मंत्री- श्री सुरेश कुमार पंखिया, कोषाध्यक्ष- श्री प्रमोद कुमार परसरामपुरिया, प्रा.स.स.- श्री शुभकरण भीमसेरिया।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री बबलू कुमार खेमका, नरेश प्रसाद जालान, विश्वनाथ प्रसाद जगनानी, अशोक वर्धन डालमिया, रामौतार प्रसाद चोखानी, हरि प्रसाद जालान, मुरारी प्रसाद जगनानी, शंकर लाल चौखानी, दामोदर प्रसाद जगनानी, दिनेश कुमार जालान।

## दूसरा दौरा

प्रादेशिक अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल के दिशा-निर्देशन पर प्रांतीय संगठन संयोजक श्री जयदेव प्रसाद नेमानी, प्रा. उपाध्यक्ष श्री रामजी भरतिया एवं मुजफ्फरपुर नगर शाखा के कार्यकारिणी सदस्य श्री बैजनाथ प्रसाद बंका इत्यादि पदाधिकारियों ने भागलपुर प्रमंडल के नारायणपुर, बांका, बांसी, शेरमारी, पीरपैंती, अमरपुर, ईशीपुर बाराहाट, भागलपुर, नाथनगर शाखाओं में संगठनात्मक दौरा दिनांक ७.१२.०४ से १२.१२.०४ तक किया।

## नारायणपुर शाखा

७.१२.०४ श्री मोहनलाल जैन की अध्यक्षता में शाखा की बैठक हुई। शाखा के निम्न पदाधिकारी चुने गये :-

अध्यक्ष- श्री शिव कुमार अग्रवाल, उपाध्यक्ष- श्री सुरेश कुमार बजाज, मंत्री- श्री परमानन्द बजाज, सं. मंत्री- श्री श्रवण कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष- श्री मनोज कुमार डोकानियां, प्रा.स.स.- श्री आनन्द कुमार सुल्तानिया।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री विजय कुमार बजाज, प्रदीप कुमार जैन, संतोष कुमार लोहिया, मनोज कुमार सुल्तानिया, राजेश कुमार सुल्तानिया, गोपी कुमार सुल्तानिया, प्रदीप कुमार डोकानिया, अरविन्द कुमार सुल्तानिया, पुरुषोत्तम कुमार बजाज, लड्डू सुल्तानिया, दिलीप अग्रवाल अग्रवाल।

## बांका शाखा

८.१२.०४ श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल की अध्यक्षता में बैठक हुई। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि पूर्व की कमेटी ही अभी शाखा का संचालन करेगी।

## बाँसी शाखा

८.१२.०४ श्री शिव कुमार बजाज की अध्यक्षता में बैठक हुई। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये :-

अध्यक्ष- श्री पवन कुमार भुवानियां, उपाध्यक्ष- श्री गोविन्द प्रसाद भुवानियां, मंत्री- श्री श्रवण कुमार केडिया, सं. मंत्री- श्री श्रवण कुमार बजाज, कोषाध्यक्ष- श्री किशोर कुमार, प्रा. स.स.- श्री शिव कुमार बजाज।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री सीताराम बजाज, बासुदेव प्र. अग्रवाल, बद्री प्र. अग्रवाल, कैलाश प्र. भालोटिया, मुकेश कुमार भुवानियां, सीताराम अग्रवाल, कुलदीप प्र. धिरिया, रत्न कुमार बजाज (छोटा), अजय कुमार ड्रोलिया, रत्न कुमार बजाज (बड़ा), दिलीप कुमार सर्राफ।

## शेरमारी शाखा

९.१२.०४ श्री कृष्ण कुमार टिबड़ेवाल की अध्यक्षता में बैठक हुई। शाखा चुनाव में निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए :-

अध्यक्ष- श्री कृष्ण कुमार टिबड़ेवाल, उपाध्यक्ष- श्री विश्वनाथ प्रसाद कटारुका, मंत्री- श्री प्रभात कुमार सुमन, सं. मंत्री- श्री ओम प्रकाश नारनोली, कोषाध्यक्ष- श्री सुनील कुमार कटारूका, प्रा.स.स.- श्री प्रभात कुमार चनानी।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री महेन्द्र कुमार दुधेलिया, राजेन्द्र कुमार कटारूका, आदित्य कुमार खण्डेलवाल, बृज मोहन टिबड़ेवाल, बनवारी लाल शर्मा, काशीनाथ कटारुका, जय प्रकाश नारनोली।

## पीरपैंती शाखा

९.१२.०४ श्री श्याम सुन्दर कटारूका की अध्यक्षता में शाखा की बैठक हुई। निम्न पदाधिकारी चुने गये :-

अध्यक्ष- श्री श्याम सुन्दर कटारूका, उपाध्यक्ष- श्री दामोदर खेतान, मुरारी लाल तुलस्यान, मंत्री- श्री अरविन्द कुमार टिबड़ेवाल, प्रा.स.स.- श्री दामोदर खेतान।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री राम गोपाल केडिया, अशोक कु. खेतान, देवी नन्दन केडिया, जगदीश खेतान, संजय कु. टिबड़ेवाल, शिव कुमार केडिया, अजय कु. कटारूका, विजय कु. खेतान, साजन कु. कटारूका, श्याम बिहारी खेतान, रमेश कुमार भकड़।

## ईशीपुर बाराहाट शाखा

१०.१२.०४ बाराहाट शाखा की बैठक श्री सज्जन कुमार मांडावेवाल की अध्यक्षता में हुई। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

अध्यक्ष- श्री सज्जन कुमार मांडावेवाला, उपाध्यक्ष- श्री राधेश्याम संथालिया, मंत्री- श्री राज कुमार केजड़ीवाल, सं. मंत्री- श्री राजेन्द्र प्रसाद टिबड़ेवाल, कोषाध्यक्ष- श्री विजय कुमार केजड़ीवाल, प्रा.स.स.- श्री राधेश्याम संथालिया।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री अर्जुन लाल खेतान, शिव कुमार खेतान, देवकी नन्दन संथालिया, श्याम सुन्दर लाठ, अरुण कुमार परशुरामका, रामौतार प्रसाद अग्रवाल, गोपाल कुमार मंडावावाला, रवि कुमार टिबड़ेवाल, सत्यनारायण हरि प्रसाद लाठ, परमानन्द खेतान, सीताराम अग्रवाल, पवन कुमार लाठ।

## भागलपुर शाखा

१०.१२.०४ भागलपुर शाखा की बैठक श्री काशी प्रसाद झुनझुनवाला की अध्यक्षता में हुई। निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए-

अध्यक्ष- सर्वश्री देवकी नन्दन झुनझुनवाला, उपाध्यक्ष- राम गोपाल पोद्दार, ईश्वर प्रसाद झुनझुनवाला, मंत्री- सत्यनारायण पोद्दार, सं. मंत्री- शिव कुमार शाह, अजीत कुमार जैन, पवन कुमार शर्मा, कोषाध्यक्ष- किशोरी लाल बाजोरिया, प्रा.स.स.- सत्यनारायण पोद्दार।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री काशी प्रसाद झुनझुनवाला, शिव कुमार केडिया, नारायण प्रसाद कोटरीवाल, हीरा लाल केडिया, ओम प्रकाश जैन, राम गोपाल चौधरी, अंजनी कुमार मांवडिया, गोपाल कृष्ण झुनझुनवाला, लक्ष्मीनारायण डोकानियां, राकेश कुमार वैद्य, अशोक कुमार भिवानीवाला।

## अमरपुर शाखा

११.१२.०४ श्री विजय कुमार दारुका की अध्यक्षता में बैठक हुई। शाखा का चुनाव निम्न रूप से हुआ :-

अध्यक्ष- सर्वश्री विजय कुमार दारूका, उपाध्यक्ष- मातादीन शर्मा, मंत्री- सहदेव कुमार कानोड़िया, सं. मंत्री- सीताराम कानोड़िया, कोषाध्यक्ष- सुभाष कुमार कानोड़िया, प्रा.स.स.- अनिल कुमार दारूका।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री अरविन्द कुमार कानोड़िया, राज कुमार दारूका, चन्द्र किशोर कानोड़िया, हीरालाल शर्मा, महेन्द्र कुमार कानोड़िया, गोपीचन्द शर्मा, युधिष्ठिर कुमार कानोड़िया।

## नाथनगर शाखा

१२.१२.०४ शाखा की बैठक श्री शिव कुमार बाजोरिया की अध्यक्षता में हुई। शाखा चुनाव निम्नरूप में हुआ :-

अध्यक्ष- सर्वश्री शिव कुमार बाजोरिया, उपाध्यक्ष- विजय कुमार जैन, संतोष कुमार चौधरी, मंत्री- आत्मा राम बुधिया, सं. मंत्री- सज्जन कुमार बाजोरिया, अरुण कुमार झुनझुनवाला, कोषाध्यक्ष-विजय कुमार दलानियां, प्रा.स.स.- विनोद कुमार भुवानियां।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री शेखर कुमार खण्डेलवाल, संतोष कुमार जैन, सुनील कुमार बाजोरिया, संजय कुमार अग्रवाल, सुनील कुमार बुधिया, विष्णु कुमार जैन, आशीष कुमार खेतान, प्रवीण कुमार भुवानियां, नरेश कुमार बाजोरिया, सुशील कुमार दलानियां, श्रवण कुमार खेतान।

## बखरी शाखा

१५.१०.०४ को शाखा का सत्र २००५-०६ के चुनाव में निम्न पदाधिकारी चुने गए- अध्यक्ष सर्वश्री सज्जन नेमानी, उपाध्यक्ष- बृजमोहन अग्रवाल, सुशील पालड़ीवाल, मंत्री- अशोक भगेरिया, संयुक्त मंत्री- प्रदीप टमकोरिया, रणधीर तुलस्यान, कोषाध्यक्ष-

संजय सिंघानिया।

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री सुशील नेमानी, संतोष शर्मा, नवल किशोर जयपुरिया, मुरारी टीबड़ेवाल।

## पटना : शिक्षा समिति की कार्यकारिणी की बैठक

२६.१२.०४ बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, पटना की कार्यकारिणी समिति की बैठक श्री महेन्द्र कुमार चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें दिनांक २०.३.०५ को डा. राम मनोहर लोहिया जयन्ती मनाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। इस अवसर पर दिए जाने वाले स्व. अर्जुन अग्रवाल एवं स्व. मंजू गुप्ता पुरस्कार हेतु शिक्षाविद् या लब्धप्रतिष्ठित पुरुष एवं महिला का नाम ३१ जनवरी तक बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति, गंगा प्रसाद बुधिया स्मृति कक्ष, आशियाना चेम्बर, ५वीं मंजिल, एक्जीविशन रोड, पटना ८०० ००१ में भेजने का अनुरोध किया गया। शिक्षा समिति द्वारा जरूरतमंद मेधावी छात्र-छात्राओं को दी जा रही छात्रवृत्ति में समाज के सम्मानित व्यक्तियों से सहयोग मांगा गया।

# पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

## गुवाहाटी : मारवाड़ी तथा अग्रवाल समाज पर अनर्गल वक्तव्य का प्रतिवाद

८ सितम्बर २००४। सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल द्वारा लोकप्रिय पत्रिका 'इंडिया टुडे' १९ जुलाई २००४ के अन्त में 'छंटनी से लगी असंतोष की आंच' शीर्षक से प्रकाशित छत्तीसगढ़ की एक रिपोतार्ज जिसमें मारवाड़ी तथा अग्रवाल समाज पर अनर्गल व्यक्तव्य थे का कड़ा प्रतिवाद करते हुए एक विरोध पत्र भेजा गया जिसे कि इंडिया टुडे ने अपने १८ अक्टूबर २००४ के अंक में प्रकाशित किया है। श्री अग्रवाल ने वक्तव्य पर घोर आश्चर्य व्यक्त करते हुए अपने प्रतिवाद में कहा- **'लगता है मारवाड़ी समाज को केवल इसलिए निशाना बनाया गया कि वे अपनी कार्य कुशलता ईमानदारी और निष्ठा से औरों से बेहतर परिणाम देते हैं। छत्तीसगढ़ मंत्रिमंडल में मारवाड़ियों को इसलिए स्थान दिया गया कि उन्हें जनता ने चुना है। इसमें ईर्ष्या और दुर्भावना की बात कहां हुई? फिर यह तो मुख्यमंत्री का विशेषाधिकार होता है कि किसे मंत्री मंडल में लें, किसे नहीं। यदि बात सिर्फ धन-बल की होती तो छत्तीसगढ़ ही क्यों दिल्ली की गद्दी पर भी मारवाड़ी ही छाये रहते।'**

## गुवाहाटी : छठ पूजा के अवसर पर बधाई और शुभकामनाएं

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा समस्त हिन्दी भाषी समाज को छठ पूजा के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान की गयी। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल तथा महामंत्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल ने इस अवसर पर कहा कि जहां एक ओर यह पर्व व्यक्ति के मंगलमय और सुख-समृद्धिशाली होने के लिए किया जाता है, वहीं दूसरी ओर इससे श्रद्धालु भक्तों को शारीरिक और मानसिक बल और सद्प्रेरणा भी प्राप्त होती है।

सम्मेलन पदाधिकारियों ने इस त्यौहार को संयम, धीरज और धैर्य के साथ अतीत की कड़वी यादों को भुलाकर निष्ठा लगन व उत्साह से मनाने का आह्वान किया।

## गुवाहाटी : द्वादश प्रान्तीय अधिवेशन २६ और २७ फरवरी २००५ को जोरहाट में

प्रान्तीय महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल द्वारा प्राप्त सूचनानुसार पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का बारहवां प्रान्तीय अधिवेशन आगामी २६ और २७ फरवरी २००५ को जोरहाट में किया जाएगा जिसका निर्णय जोरहाट शाखा की कार्यकारिणी समिति की एक बैठक में लिया गया।

## गुवाहाटी : प्रांतीय सम्मेलन की षष्ठम् कार्यकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न

१२ अक्टूबर २००४। पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की षष्ठम् कार्यकारिणी समिति की बैठक गुवाहाटी में कार्याध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका के सभापतित्व में आयोजित की गई एवं महत्वपूर्ण विचार-विमर्श किये गये। मणिपुर और पूर्वोत्तर में उग्रवादियों द्वारा की गई हिंसा की कड़ी निन्दा की गई तथा उन्हें तथा राज्य व केन्द्र सरकार से शान्ति बहाल कर भय मुक्त वातावरण बनाने पर जोर दिया गया।

गत दिनों उग्रवादी हिंसात्मक घटनाओं एवं प्राकृतिक घटनाओं में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए मौन श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की गई।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में अधिकाधिक राहत सामग्री और आवश्यक वस्तुओं के अलावा चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने हेतु समाज बंधुओं से आह्वान किया गया।

बिहार में असम के रेल यात्रियों के साथ हुए दुर्व्यवहार की सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष व महामंत्री द्वारा कड़े शब्दों में भर्त्सना की गई एवं दोनों पक्ष एवं बुद्धजीवी वर्ग से इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास करने का आह्वान किया गया।

## जोरहाट : दीपावली मिलन समारोह आयोजित

१३ नवम्बर। पूर्वोत्तर सम्मेलन की जोरहाट शाखा के तत्वावधान में दीपावली पर्व बड़े हर्ष उल्लास के पास समाज के सभी वर्गों

द्वारा एकत्रित होकर मनाया गया। समारोह में भारी संख्या में उपस्थित समाज बंधुओं, महिलाओं ने दीपावली मिलन समारोह का आनन्द उठाते हुए परंपरागत ढंग से एक दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं दी तथा गणमान्य समाज के उपस्थित बुजुर्गगणों से आशीर्वाद ग्रहण किया।

अध्यक्ष कन्हैयालाल वाकलीवाल की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष बाबूलाल गगड़ ने अपने स्वागत भाषण में दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सूचित किया कि पू.प्र.मा.स. का प्रादेशिक अधिवेशन आगामी फरवरी २००५ के अंत में धार्मिक नगरी जोरहाट में प्रथम बार होने जा रहा है। उन्होंने समाज के महानुभावों से उक्त कार्यक्रम में हर प्रकार से सहयोग देकर कार्यक्रम सफल बनाने का आह्वान किया। असम सत्र महासभा का जनगोष्ठी अक्रिया भावना समारोह आगामी २१-२२ एवं २३ जनवरी को होने जा रहा है जिसमें असम के सभी सत्र अधिकारी पधारेंगे। कार्यक्रम का संचालन कृष्ण बजाज, ओमप्रकाश धूत, राजकुमार सेठी ने किया। मारवाड़ी युवा मंच व नवयुवक मण्डल जोरहाट का सहयोग सराहनीय था।

## गुवाहाटी : मतदाता सूची में नाम पंजीकृत कराने की अपील

१४ नवम्बर २००४। सम्मेलन ने समस्त समाज बन्धुओं से अनुरोध किया है कि वे मतदाता सूची में अपना तथा अपने परिवार के सदस्यों का नाम लिखवायें। जिन युवक-युवतियों की उम्र १८ साल या उससे अधिक हो चुकी है, उनका नाम मतदाता सूची में पंजीयुक्त किया जाये। इन दिनों राज्य में मतदाता सूची में नये नाम लिखवाये जाने तथा संशोधन की प्रक्रिया चल रही है। अत: किसी भी वयस्क नागरिक का नाम न छूटे और यदि कोई चुनाव कर्मचारी किसी भी व्यस्क भारतीय नागरिक का नाम दर्ज करने से इनकार कर देता है तो अपने समीपवर्ती मुख्य चुनाव अधिकारी से लिखित में शिकायत दर्ज करावें।

## गुवाहाटी : 'ज्योति प्रभा' दूसरा संस्करण का विमोचन

'ज्योति प्रभा' रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला की असमिया रचनाओं का हिन्दी अनुवाद है। हिन्दी भाषियों का ज्योतिप्रसाद अगरवाला के अन्दर एक साथ विराजमान कवि, संगीतकार, कथाकार, चित्रकार, नाटककार, नृत्य परिचालक, शिल्पकार, चलचित्र-निदेशक, दार्शनिक, चाय खेतिहर एवं स्वतंत्रता सेनानी व्यक्तित्व से परिचय हो तथा उनकी रचनाओं का रसास्वादन वे कर सकें इसी उद्देश्य से उनके गीत, कविता, निबंध, कहानी, नाटक एवं उनके जीवन-वृत्त के संग्रह की प्रस्तुति है यह 'ज्योति प्रभा'।

असमिया साहित्य और संस्कृति को अपने विशाल वाङ्मय से उज्वल और प्रशस्त करने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व असमिया समाज में शंकर देव की तरह पूजित रूपकुंवर ज्योति प्रसादजी की रचनाओं में असम की आत्मा, भाव, सौन्दर्य, प्रज्ञा एवं प्रकृति का अनोखा सम्मिश्रण प्रस्फुटित है। इन्होंने असमी संगीत को एक नई दिशा दी जो 'ज्योति संगीत' के नाम से विख्यात है।

१९९५ में 'ज्योति प्रभा' का प्रथम संस्करण भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा प्रशंसोपरांत इस द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण का विमोचन जून २००३ में गुवाहाटी में हुआ। असमिया समाज में इसकी काफी प्रशंसा हुई है।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में सम्मेलन की हर शाखा द्वारा इस पुस्तक की एक-एक प्रति ली जाए तो इसका प्रचार सम्पूर्ण भारत में हो सकता है। मूल्य रु. २५०/-। अनुवादक देवी प्रसाद बागड़ोदिया। पता- बागड़ोदिया निवास, ज्योतिनगर, डिब्रूगढ़- ७८६००५, असम।

## राहा शाखा : नई कार्यकारिणी का गठन

४.११.२००४ सम्मेलन की राहा शाखा की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के सदस्यगण इस प्रकार हैं -

सर्वश्री भगवान दास खेमका- मुख्य उपदेष्टा, मुख्य संचालक एवं कार्यकारिणी के पदेन सदस्य, मांगीलाल चौधरी- अध्यक्ष, महावीर अग्रवाल - कार्यवाहि सभापति, नरसिंह लाल अग्रवाल - उपाध्यक्ष, बाबूलाल सेठीया - उपाध्यक्ष, पुरुषोत्तम शर्मा - सम्पादक, विष्णु खेतान - सह सम्पादक, ललीत कुमार अग्रवाल - कोषाध्यक्ष, दीनदयाल पोद्दार - सदस्य, लादूराम सुरेका - सदस्य, अशोक कुमार खेतान - सदस्य, अशोक कुमार मिश्र - सदस्य, राजेन्द्र कुमार गोयनका - सदस्य, संदीप खादूवाला - सदस्य, गौरीशंकर पोद्दार - सदस्य, माणिक चन्द सेठिया - सदस्य, बच्छराज बैंद - सदस्य, मातुराम शर्मा - सदस्य, गंगाराम शर्मा - सदस्य, राधेश्याम शर्मा - सदस्य, अनूप कुमार चौधरी - सदस्य, सुनील कोठारी - सदस्य। प्रादेशिक सभा के मनोनीत सदस्य- सर्वश्री नरसिंहलाल अग्रवाल, विष्णु कुमार खेतान, लादूराम अग्रवाल, महावीर अग्रवाल, मातुराम शर्मा।

## सिलचर में अपने समुदाय पर हुए अत्याचार का विरोध

१३.११.२००४, राहा शाखा की नई कार्यकारिणी की एक साधारण सभा में सिलचर में अपने समुदाय के ऊपर हुए अत्याचार पर खेद प्रकट किया गया तथा सरकार के निकम्मेपन को दुर्भाग्यजनक घोषित किया गया। सरकार को एक ज्ञापन देकर दोषी को सजा दी जाए यह निर्णय लिया गया।

## होजाई शाखा

सत्र २००५-०७ के पदाधिकारी व कार्यकारिणी :-

१० जनवरी, २००५ सम्मेलन की होजाई शाखा की त्रैवार्षिक साधारण सभा में सत्र २००५-०७ के लिए नई कार्यकारिणी का गठन किया गया एवं पदाधिकारियों की घोषणा की गई जो इस प्रकार है :-

श्री टोरमल मोर- अध्यक्ष, श्री श्यामसुन्दर गाड़ोदिया- उपाध्यक्ष, श्री निरंजन सरावगी- सचिव, श्री राजेश केजड़ीवाल- सह-

सचिव, श्री रमेश मुंदड़ा- कोषाध्यक्ष। कार्यकारिणी सदस्य हैं सर्वश्री ओंकारमल अग्रवाल, परमानन्द सुरेका, सज्जन शर्मा, राधेश्याम चनानी, शिवचन्द केजड़ीवाल, गौरीशंकर शर्मा, प्रदीप सुरेका, विनोद अग्रवाल, हरिप्रसाद गोयनका, ललित केजड़ीवाल, सुनील भीमसरिया एवं मनोज तोलावत।

# उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

## राउरकेला : समाज के कई व्यवसायी बन्धु डीआरयूसीसी के सदस्य घोषित

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय शाखा एवं उपशाखाओं के निम्न सदस्य एवं व्यवसायी बंधु ईस्ट कोस्ट रेलवे के सम्बलपुल डिवीजन में भिन्न-भिन्न अनुष्ठान से डीआरयूसीसी के सदस्य मनोनीत हुए- गौरीशंकर अग्रवाल- बलांगीर, ईश्वरचन्द्र जैन- टिटिलागढ़, अनिल कुमार अग्रवाल- कांटाबांजी, गिरधारीलाल केडिया- सम्बलपुर, अशोक सिंघल- सम्बलपुर।

## सम्बलपुर : दीपावली मिलन समारोह एवं कवि सम्मेलन अनुष्ठित

१४.११.२००४ सम्मेलन की सम्बलपुर शाखा द्वारा दीपावली प्रीति सम्मेलन के अवसर पर हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शाखाध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे सांसद श्री सुरेन्द्र लाठ। कार्यक्रम में शाखा सचिव श्री हजारीमल ओझा, कोषाध्यक्ष श्री सज्जन भुन, राजकुमार पोद्दार, गिरधारी केडिया, प्रभाष रसवालिया, कन्हैयालाल जालान, मंगतुराम अग्रवाल, ईश्वर जिन्दल सहित मारवाड़ी युवा मंच, खेतराजपुर एवं बखरी के पदाधिकारी आदि अनेकों गणमान्य उपस्थित थे।

## बलांगीर : नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर आयोजित

बलांगीर शाखा के सहयोग से बेनु आई इन्स्टीच्युट एवं रिसर्च सेंटर दिल्ली द्वारा नेत्र निकेतन अस्पताल में नि:शुल्क मोतियाविन्द का आपरेशन कैम्प का २४.११.०४ से ३०.११.०४ तक आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संचालन करने के लिए डाक्टर श्री अजय साप्रा, डा. अजय साइनी एवं श्रीमती अरुन्धती कर एवं उनके चार सहयोगी दिल्ली से आये थे। कैम्प में मुफ्त लेन्स, ठहरने एवं खाने का बन्दोवस्त डाक्टरों द्वारा किया गया था। ४०६ मरीजों का सफल आपरेशन किया गया। सर्वश्री हरिनारायण जैन, गौरीशंकर अग्रवाल, किशनलाल केडिया, बेदप्रकाश अग्रवाल एवं राधेश्याम खेमका का पूर्ण सहयोग रहा। बलांगीर मारवाड़ी पंचायत के तरफ से जरूरत मन्द मरीजों को मुफ्त कम्बल का बंटन किया गया।

*भीलवाड़ा (राजस्थान) से पधारी लिम्का बुक आफ वर्ल्ड रिकार्डधारी कुमारी सुरभि गर्ग १२१ घड़ों के साथ शरद मेले में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए।*

# उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

## कानपुर : शरद मेला स्वागतम् २००५ का भव्य आयोजन

९ जनवरी २००५। सम्मेलन की कानपुर शाखा द्वारा शरद मेले का आयोजन किया गया। मेले में समाज के परिवारजनों द्वारा खान-पान, गेम्स तथा विक्रय प्रदर्शन आदि के स्टाल लगाये गये। इनके अतिरिक्त कारपोरेट स्टाल भी लगाये गये। बच्चों के मनोरंजन हेतु झूले, बाउन्सी, जोकर आदि का भी मेले में प्रबंध था। मेले का प्रमुख आकर्षण भीलवाड़ा की कु. सुरभि गर्ग रही जिन्होंने १२१ घड़ों के नृत्य तथा चकरी नृत्य कर सबका मन मोह लिया। मेले में मुख्य अतिथि के रूप में सर्वश्री सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल (राज्यमंत्री) सम्मानित अतिथि के रूप में, डा. गौर हरि सिंहानिया, विधायक सलिल विश्नोई, प्रदेश अध्यक्ष सोमप्रकाश गोयनका तथा प्रदेश महामंत्री श्री गोपाल सूतवाला उपस्थित थे। कानपुर शाखा के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण सिंहानिया ने अतिथियों एवं आगन्तुकों का स्वागत करते हुए समाज सेवा के लिए सभी बंधुओं से तत्पर रहने को कहा तथा समाज में भामाशाहों से अनुरोध किया कि मारवाड़ी सेवा संस्थान हेतु भूखंड संस्था को मुहैया कराये ताकि उस भवन से संस्था द्वारा वृद्धों एवं विधवा महिलाओं हेतु रोजगारपरक कार्यक्रम संचालित किये जा सकें। श्री सिंहानिया ने बताया कि मेले में प्राप्त अनुदान का सदुपयोग जरूरतमंदों को शिक्षा, विवाह, स्वावलम्बन एवं उपचार की जरूरत पूरा करने हेतु किया जाता है। महामंत्री श्री अनिल परसरामपुरिया ने संस्था की निरन्तर प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया तथा सुनामी भूकंप से पीड़ित भाई बहिनों को दिल खोलकर सहयोग देने का आहवान

*दायें से- श्री पंकज बंका, श्री हरिकृष्ण चौधरी, श्री अनिल परसरामपुरिया, श्री सत्यनारायण सिंहानिया, श्री सुरेन्द्र मोहन अग्रवाल (मुख्य अतिथि), श्री सोमप्रकाश गोयनका, प्रदेश अध्यक्ष, माइक पर श्री महेश भगत।*

किया। मेले में बच्चों की चित्रकला एवं मेहंदी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। मेले को भव्य स्वरूप प्रदान करने में संयोजक सर्वश्री हरिकृष्ण चौधरी एवं पंकज बंका के प्रयास सराहनीय रहे। सह संयोजक सर्वश्री वासुदेव सराफ, मनोज अग्रवाल, राजेन्द्र बजाज, उपाध्यक्ष सुशील तुलस्यान, सत्येन्द्र महेश्वरी, मंत्री सुनील मुरारका, सं. मंत्री सुबोध रूंगटा, कोषाध्यक्ष महेश भगत तथा श्रीगोपाल तुलस्यान, श्रीराम अग्रवाल, विश्वनाथ पारीक, कमलेश गर्ग, कीर्ति सराफ,रमेश रूंगटा, सुनील केड़िया, भजनलाल शर्मा, बालकृष्ण शर्मा, श्रीमती रेनू भोजनगरवाला, श्रीमती विन्दा भुकानिया, नरेन्द्र भगत, अनूप सिगतिया, मनोज टीबड़ेवाल, बलदेव जाखोदिया आदि ने भी भागीदारी की।

**हल्द्वानी : निर्धनों को कम्बल वितरण**

२५ दिसम्बर। कंपकंपाती ठंड से बचाने हेतु हल्द्वानी में निर्धन परिवारों को २०० कम्बल वितरित किए गए जिसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कुमायुं मंडल के अध्यक्ष डा. प्रमोद अग्रवाल 'गोल्डी', डॉ. धर्म प्रकाश यादव, विपिन गुप्ता, सुनील भारद्वाज आदि का सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम में उत्तरांचल सरकार की कैबिनेट मिनिस्टर डा. इन्दिरा ने भी भागीदारी की।

## अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

**जुनागढ़ : आदिवासी बच्चों को सहायता प्रदान**

२२-१२-०४, जूनागढ़ शाखा द्वारा कुआमूल रामपुर क्षेत्र का भ्रमण किया गया। वहां के एक मात्र आदिवासी विद्यालय में १५५ बच्चों को समिति द्वारा गरम कपड़े, स्वेटर एवं ११०० रुपये की धनराशि प्रदान की गई। इस मौके पर एक साधारण सभा आयोजित हुई। चमेली देवी महिला महाविद्यालय के सभापति लायन माणिकचंद अग्रवाल, सचिव श्री भागीरथी सामंतराय, अध्यक्षा प्रिय मंजरी पण्डा, सदस्य श्री संजय अग्रवाल, महिला समिति, अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, पूर्व अध्यक्षा सविता अग्रवाल उपस्थित थे। महिला समिति अध्यक्ष ने स्कूल को एक टेलीविजन सेट और डीटीसी एंटीना प्रदान किया।

# अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

## हैदराबाद : आई.पी.एस. अधिकारियों का स्वागत

३१-११-०४। आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी युवा मंच द्वारा आई.पी.एस. अधिकारियों का राजस्थानी परम्परानुसार भव्य स्वागत किया गया। मंच के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने उन्हें राजस्थानी साफा पहनाकर एवं स्मृतिचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। सम्मानित अधिकारियों में थे सर्वश्री रंतनलाल डांगी, रमाकान्त गुप्ता, अशोक कुमार यादव, एम.के. सिंह एवं हिंगलाजदान। समारोह में मंच के प्रान्तीय मंत्री श्री रामप्रकाश भण्डारी सहित बड़ी संख्या में मंच कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## कांटाबांजी शाखा : ब्लड बैंक हेतु प्रयासरत

मारवाड़ी युवा मंच कांटाबांजी शाखा द्वारा रक्त की अनुपलब्धता को देखते हुए स्थानीय विधायक जनाब हाजी मोहम्मद आयुब खां के मार्ग दर्शन में एक ब्लड बैंक बनाने का निर्णय लिया गया। ड्रग कन्ट्रोल भुवनेश्वर, पश्चिम उड़ीसा विकास परिषद के अध्यक्ष, भुवनेश्वर, जिलापाल बालांगीर, जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी, बलांगीर आदि को मंच ने पत्र प्रेषित कर ब्लड बैंक निर्माण हेतु सहयोग मांगा है।

प्रथम चरण के तहत विधायक महोदय ने अपने विद्यालय निधि से ब्लड बैंक हेतु दो लाख रुपये देने की मंजूरी दी है। कार्य की सफलता हेतु मारवाड़ी युवा मंच ने ब्लड बैंक समिति का गठन किया है। जिसका संयोजक शाखा के पूर्व मंत्री युवा अजय अग्रवाल को बनाया गया। समिति के सदस्य हैं शाखाध्यक्ष युवा आशीष अग्रवाल, शाखामंत्री युवा आनन्द अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष युवा कैलाश अग्रवाल, संस्थापक शाखा मंत्री युवा कैलाश अग्रवाल, राष्ट्रीय सह संयोजक युवा सुभाष अग्रवाल, प्रान्तीय संयोजक युवा राजेश अग्रवाल, पूर्व शाखा अध्यक्ष युवा कैलाश अग्रवाल, प्रा. संयोजक युवा कैलाश अग्रवाल, प्रा. कार्यकारिणी सदस्य युवा नारायण अग्रवाल, पूर्व शाखाध्यक्ष युवा जे.पी. तायल, शाखा उपाध्यक्ष युवा मनोज अग्रवाल व सक्रिय सदस्य मुकेश जैन आदि।

## पटना : पदाधिकारी द्वारा शाखाओं का दौरा एवं गठन

बिहार प्रान्त की मंडल 'घ' में बगहा शाखा का गठन करते हुए चकिया, बेतिया-मिड-टाउन, नरकटियागंज, सुगौली बेतिया

शाखाओं का दौरा किया गया एवं मंडल 'च' में लहेरियासराय शाखा का गठन किया गया। ३१.१२.०४ को बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रान्तीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल की उपस्थिति में मारवाड़ी युवा मंच बगहा शाखा का २१ सदस्यों की कार्यकारिणी का गठन किया गया। अध्यक्ष सर्वश्री प्रेम कुमार रुंगटा, मंत्री पंकज रुंगटा, उपाध्यक्ष श्रवण कुमार अग्रवाल, संदीप तुलस्यान, प्रकाश तुलस्यान, कोषाध्यक्ष श्याम कुमार भालोटिया, संयुक्त मंत्री श्याम रुंगटा एवं संजय बैरासिया। शाखा कार्यकारिणी में सर्वश्री महेश वैरासिया, नवनीत कुमार खेमका, संजय कुमार तुलस्यान, उमेश वैरासिया, रमेश कुमार ड्रोलिया, श्याम कुमार तुलस्यान, दीपक पैरासिया, रोशन कुमार रुंगटा, प्रीतम वैरासिया, विजय वैरासिया, बलराम कुमार रुंगटा, पुनीत कुमार रुंगटा, केदार नाथानी।

२.१.२००५ को लहेरियासराय शाखा का गठन किया गया। सभा की अध्यक्षता चौधरी संजय अग्रवाल ने की, जिनमें सर्वसम्मति से संस्थापक कार्यकारिणी का गठन किया गया। अध्यक्ष सर्वश्री पवन मित्तल, मंत्री कन्हैया लोहिया, उपाध्यक्ष देवेन्द्र गुप्ता, विमल कुमार अग्रवाल, दिनेश कुमार बालोदिया, कोषाध्यक्ष जीवन कुमार डोकानिया, संयुक्त मंत्री गीरधारी सुल्तानिया, राकेश कुमार केजड़ीवाल। कार्यकारिणी में सर्वश्री अशोक कुमार सरावगी, राकेश कुमार बालोदिया, राहुल लोहिया, अजय कुमार कानोड़िया, रानु सुल्तानिया, रमेश माखड़िया, संजय कालोठिया, गोपाल कुमार सरावगी, विरेन्द्र कुमार गुप्ता, संजय लोहिया, विष्णु केडिया, प्रदीप नवनेटिया, सुजीत कुमार गुप्ता।

## अन्य संस्थाएं

# राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग

### भाषा सिर्फ मान्यता से नहीं बढ़ती- लोढ़ा

### मैं और मेरी पार्टी का पूरा सहयोग रहेगा- मोहम्मद सलीम

कोलकता, ८ जनवरी २००५। कोई भी भाषा सिर्फ सरकारी मान्यता से आगे नहीं बढ़ती, भाषा का उत्थान तभी हो सकता है, जब ज्यादा से ज्यादा लोग उसे प्रयोग में लाये। ये बातें जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति आचार्य कल्याणमल लोढ़ा ने राजस्थानी प्रचारिणी सभा (कोलकाता) एवं राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी (बीकानेर) के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय भाषा परिषद में आयोजित अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह का उद्घाटन करते हुए कही। श्री लोढ़ा ने कहा कि किसी भी भाषा को आगे बढ़ाने में लोगों की प्रमुख भूमिका होती है। यह बात सही है कि राजस्थानी भाषा को भी आठवीं सूची में जगह देनी चाहिए, परंतु इसका मतलब ये नहीं कि सिर्फ सूची में नहीं होने के कारण राजस्थानी भाषा किसी भी अन्य भाषा से कम है। राजस्थानी एक ऐसी समृद्ध भाषा है, जो उत्कृष्ट साहित्य दे सकती है। राजस्थानी भाषा में एक अलग लालित्य व आकर्षण है, जिसमें मानवीय भावनाओं को परखने और पूरी जाति को अनुप्राणित करने की शक्ति है। वर्षों पहले कवि गुरु रवीन्द्र ने कहा था कि इस बंजर भूमि में एक ही उर्वरा भूमि है, वह है वीरों व शहीदों की भूमि राजस्थान। राजस्थान केवल वीरों व वीरांगनाओं की ही धरती नहीं है, बल्कि वहां का शिल्प व वहां की कला भी बेमिशाल है, जो राजस्थानी भाषा की आन्तरिक शक्ति व रक्षा कवच है।

समारोह के मुख्य अतिथि सांसद मो. सलीम ने कहा कि अपनी सभ्यता व संस्कृति से सबसे ज्यादा मध्य वर्गीय परिवार के लोग जुड़े रहते हैं। लोग सब कुछ बदल सकते हैं, लेकिन अपनी मातृभाषा नहीं। कोई भी भाषा सिर्फ सरकारी सहयोग से आगे नहीं बढ़ सकती, बल्कि उसके बढ़ने में उसकी अपनी गति, अपना लय व आम लोगों के बीच बनी उसकी पैठ सहायक होती है। बंगाल के युवकों व कलाकारों में शुरू से ही राजस्थान के प्रति आकर्षण रहा है। वहां की चित्र कला, सुन्दर भवन लोगों के आकर्षण के केन्द्र हैं। आजादी की लड़ाई में भी वहां के वीरों व शहीदों की गाथा सेनानियों के लिए पथ प्रदर्शक रही है। राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में जगह दिलाने के लिए और राजस्थानियों के हक के लिए वे संसद भवन में एक सिपाही की तरह लड़ेंगे। सिर्फ वे ही नहीं राज्य सरकार और वामपंथी पार्टी का हरेक सांसद राजस्थानियों के अधिकारों की लड़ाई के लिए कृत संकल्प हैं। सभी वामपंथी संविधान में राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलाने के मामले में एक हैं। वाममोर्चा ने मणिपुरी, नेपाली व मैथिली भाषा के साथ-साथ राजस्थानी और डोगरी भाषा को संविधान में मान्यता दिलाने की मांग की थी। भाषा की अपनी गति है, इतिहास है, संस्कृति है, शिक्षा है। यदि कोई भाषा अपने अधिकार व मान्यता की बात करती है तो उसे राज्य भाषा या हिन्दी भाषा का विरोधी नहीं समझना चाहिए। पश्चिम बंगाल हमेशा राजस्थान का करीबी रहा है और बंगाल के साहित्यकार और फिल्मकारों ने ही सबसे अधिक राजस्थानी भाषा व संस्कृति को उजागर किया है।

रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. पवित्र सरकार ने कहा कि राजस्थानी भाषा समृद्ध भाषा है, सभी भाषाएं एक समान होती हैं। राजस्थानी लोग स्वभाव से हिंसक नहीं होते। अत: अपनी भाषा को मान्यता दिलाने के लिए हिंसक रूप नहीं अपनायेंगे। इस मौके पर राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी ने कहा कि हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा है उसे उसका गौरव मिलना चाहिए, लेकिन राजस्थानी भाषा में वे सारे गुण विद्यमान हैं जो किसी भी समृद्ध भाषा की होती है।

स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल ने अपने स्वागत भाषण म कहा कि इससे पहले १९४४ में पश्चिम बंगाल के दिनाजपुर में पहला अधिवेशन हुआ था। ८ करोड़ लोगों की भाषा राजस्थानी को संविधान की आठवीं सूची में शामिल कराना चाहिए। इसके लिए वे एक व्यवस्थित कार्यक्रम के तहत कोशिश करेंगे।

समारोह के संयोजक श्री रतन शाह ने कहा कि राजस्थानी के नाम पर चेतना और जागरूकता का अभाव है।

समारोह के समापन सत्र के मुख्य अतिथि राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी ने कहा कि राजस्थानी जैसी समृद्ध भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाना चाहिए। जब गुजरात की भाषा गुजराती, महाराष्ट्र की भाषा मराठी हो सकती है तो क्यों नहीं राजस्थान की भाषा राजस्थानी हो सकती है?

विशिष्ट अतिथि सांसद संतोष बागड़ोदिया ने मो. सलीम से राजस्थानी भाषा को आठवीं सूची में मान्यता दिलाने के लिए बिल लाने की अपील करते हुए कहा कि वाममोर्चा द्वारा ऐसा करने से राजनीतिक दल विरोध नहीं करेंगे। राजस्थानियों से निवेदन करते हुए उन्होंने कहा कि जब हमें राजस्थानी बोलने में शर्म आयेगी तब हम अपनी मातृभाषा का विकास नहीं कर सकते।

## कोलकाता : समाजसेवी श्री जुगलकिशोर जैथलिया का सम्मान

२ जनवरी, २००५। राजश्री स्मृतिन्यास साहित्य सम्मान की ४५वीं कड़ी में समाजसेवी श्री जुगल किशोर जैथलिया को एक

*राजश्री स्मृतिन्यास द्वारा आयोजित जुगल किशोर जैथलिया सारश्वत सम्मान समारोह में बाएं से - महाकवि गुलाब खंडेलवाल, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, आचार्य कल्याणमल लोढ़ा, जुगल किशोर जैथलिया एवं डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी।*

समारोह में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री ने कहा कि श्री जैथलिया ने अपनी विश्वसनीयता और सुव्यवस्थित पद्धति से स्वयंसेवक के रूप में अपना एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। समाज में ऐसे लोग बिरले ही मिलते हैं, हमें ऐसे लोगों की आवश्यकता है। जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति आचार्य कल्याणमल लोढ़ा ने कहा कि श्री जैथलिया जैसे बाहर हैं वैसे ही अंदर हैं। इनके जीवन में आजतक कोई असमानता मुझे देखने को नहीं मिली। वरिष्ठ कवि श्री गुलाब खण्डेलवाल ने अपनी अद्यतन कृति 'दिया जग को तुझसे पाया' श्री जैथलिया को समर्पित किया। बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय के अध्यक्ष डा. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने श्री जैथलिया की सदा-शयता और आत्मीयता की प्रशंसा करते हुए उन्हें अपना मार्ग दर्शक बताया। अपने सम्मान के प्रति आभार प्रकट करते हुए श्री जैथलिया ने अपनी सेवाओं को निरंतर देते रहने का आश्वासन दिया। डा. श्यामलाल उपाध्याय ने श्री जैथलिया का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन डा. विश्रान्त वशिष्ठ ने किया। श्री रामचन्द्र गुप्त ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सर्वश्री प्रकाश चंडालिया, अरुण प्रकाश मल्लावत, श्रीराम तिवारी, महावीर बजाज, महावीर नरसरिया, बलदेवदास बाहेती, जगदीश प्र. शाह, दाउलाल कोठारी आदि विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, कवि, साहित्यकार एवं पत्रकार उपस्थित थे।

## कोलकाता : वसुन्धरा राजे सरकार का वर्ष-पूर्ति आयोजन

# वसुन्धरा राजे सरकार का १ वर्ष का कार्यकाल अच्छा रहा- श्री सीताराम शर्मा

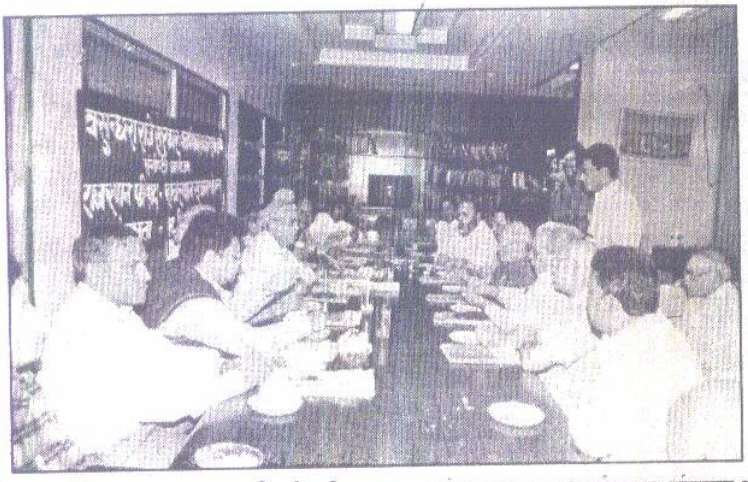

*राजस्थान परिषद द्वारा बसुन्धरा राजे वर्षपूर्ति कार्यक्रम में अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री सीताराम शर्मा। परिषद के महामंत्री अरुण प्रकाश मल्लावत, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री महावीर प्रसाद नारसरिया, श्री शार्दुल सिंह जैन व अन्य पदाधिकारीगण।*

२१ दिसम्बर। राजस्थान की श्रीमती वसन्धरा राजे सरकार का १ वर्ष का कार्यकाल अच्छा रहा। किसी भी सरकार के लिए १ वर्ष का समय बहुत कम होता है, लेकिन यह कह सकते हैं कि शुरूआत अच्छी हुई और किसी भी बड़ी उपलब्धि के लिए अच्छी शुरूआत होना जरूरी है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा राजस्थान सूचना केन्द्र एवं प्रवासी राजस्थानियों की संस्था राजस्थान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थान सूचना केन्द्र के सभागार में वसुंधरा राजे सरकार का वर्ष पूर्ति कार्यक्रम के उपलक्ष्य में आयोजित एक गोष्ठी में बोल रहे थे। श्री शर्मा के अनुसार राजस्थान में लघु उद्योग, जेम्स एंड ज्वेलरी एवं पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावनाएं है। राज्य सरकार को ३-४ प्राथमिकता वाले क्षेत्र तय करने होंगे। कोई भी राज्य सरकार एक साथ सभी क्षेत्रों में अव्वल नहीं हो सकती। राज्य सरकार को व्यापारिक नजरिया (बिजनेस ऐट्टिट्यूड) का विकास करना पड़ेगा। उन्होंने राजस्थान सरकार से कोलकाता में एक व्यापार सम्पर्क केन्द्र स्थापित करने का आग्रह किया। श्री शर्मा के अनुसार राजस्थान के तीनों महत्वपूर्ण संवैधानिक पद पर महिला का होना अपार हर्ष की बात है फिर भी राजस्थान में महिला विकास, शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में काफी कार्य किये जाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का शुरूआत करते हुए राजस्थान परिषद के उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने कहा कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने राज्य में ढांचागत विकास हेतु अनेक कदम उठाये हैं। ४९४१ किलोमीटर की सड़क बनाई गई है, ३०६ गांवों को मुख्य सड़कों से जोड़ा गया है। राज्य के ३२ में से ३० जिलों में जलरक्षण योजना प्रारंभ की गयी है। प्रशासन को भी चुस्त-दुरुस्त बनाया गया है। २३१७ राजीव गांधी स्वर्ण जयंती पाठशालाएं नियमित राजकीय विद्यालयों में परिवर्तन, ११४४ राजकीय प्राथमिक विद्यालय को उच्च विद्यालयों में क्रमोन्नत और ३२२ राजीव गांधी पाठशालाएं प्राथमिक विद्यालयों में परिवर्तित हुए। उन्होंने राज्य सरकार के वार्षिक योजना के आकार बढ़ाने की सराहना की। छपते-छपते दैनिक एवं ताजा टी.वी. समूह के संचालक श्री विश्वम्भर नेवर ने कहा कि राजस्थान में अभी बहुत कुछ करना बाकी है पर अब तक जो कुछ हुआ है आशाप्रद है। राज्य में महिलाओं ने भी प्रगति हासिल की, लेकिन और भी करना बाकी है। वर्तमान सरकार का राजनैतिक भावना से ऊपर उठते हुए पिछली सरकार द्वारा स्थापित राजीव गांधी पाठशालाओं का नियमित करना एवं उनके नाम में परिवर्तन न करना तथा राजस्थान फाउन्डेशन को जारी रखना प्रशसंसनीय है। वरिष्ठ समाजसेवी श्री रतन शाह ने महिला शिक्षा, अनुसूचित जातियों एवं जन जातियों को छात्रवृत्तियां देने तथा राज्य में आयुर्वेदिक एवं टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय बनाने के सरकार के निर्णयों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस सरकार का कार्य सम्भावना से भरा है आशाप्रद है। उन्होंने कहा कि राजस्थानी भाषा को आठवीं सूची में मान्यता दिलवाने हेतु विशेष प्रयास करना चाहिए क्योंकि वह पूरे समाज की पहचान है। गोष्ठी में सर्वश्री महावीर प्रसाद नारसरिया, राजस्थान परिषद के अध्यक्ष शार्दुल सिंह जैन एवं फास्ट न्यूज के संपादक संजय सनम, राजस्थान परिषद के महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने भी प्रभावी विचार रखे। सूचना केन्द्र के प्रभारी श्री जयदीप भट्टाचार्य ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री रुगलाल सुराणा ने किया। कार्यक्रम में सर्वश्री परशुराम मुंधड़ा, गोविन्द नारायण काकड़, गोविन्द शर्मा, सम्पत माणधना, अनुराग नोपानी एवं स्थानीय राजस्थानी समाज, प्रेस एवं मीडिया के गणमान्य उपस्थित थे।

## जोगबनी : श्रीघासीराम तापड़िया का सार्वजनिक अभिनन्दन सम्पन्न

शिक्षा, धार्मिक, सामाजिक सेवा एवं संस्कार जैसे क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान देने वाले श्री घासीराम तापड़िया का 'सार्वजनिक अभिनंदन' जोगबनी में २० दिसम्बर २००४ को उनके ७५ वर्ष पूरे होने के 'अमृत महोत्सव' पर किया गया। समारोह में संस्थागत एवं व्यक्तिगत रूप से अभिनंदन पत्र एवं शुभकामनाएं दी गई।

## कोलकाता : महाकवि गुलाब खण्डेलवाल का एकल काव्य पाठ

१५ जनवरी, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं महर्षि दधीचि सेवा ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में महाकवि गुलाब खण्डेलवाल के एकल काव्य पाठ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल आचार्य श्री विष्णुकांत शास्त्री ने किया। कवि गुलाब खण्डेलवाल ने प्रबंध काव्य, महाकाव्य, खंड काव्य, गीत, गजल, भक्ति गीत आदि पर ५० से अधिक कृतियों का सृजन किया है। समारोह में कवि गुलाब ने देशभक्तिपूर्ण, हिमालय के अनुपम सौन्दर्य, प्रेमगीत, भक्ति गीत, गजल, गीत, वृन्दावन गीत आदि पर विविधवर्णी कविताओं से श्रोताओं को भाव विभोर किया। इनके गीतों एवं गजलों की सांगीतिक प्रस्तुति की श्री नवलव्यास, श्रीमती मृदुला कोठारी एवं मंजु गुटगुटिया ने। मंच पर उपस्थित थे पार्षद श्री राजकिशोर गुप्ता, डा. प्रेम शंकर त्रिपाठी एवं महावीर बजाज। अतिथियों का स्वागत किया सर्वश्री पूनमचंद सूंठवाल, रामदेव कांकड़ा, अरुण प्रकाश मल्लावत एवं अनुराग नोपानी ने। कार्यक्रम का संचालन किया श्री वंशीधर शर्मा एवं दाउलाल कोठारी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन किया श्री जुगल किशोर जैथलिया ने।

## कोलकाता : दादा इदाते को वर्ष २००५ का विवेकानन्द सेवा सम्मान ३० जनवरी ०५ को

१३ जनवरी। श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय द्वारा वर्ष २००५ का १९वां विवेकानन्द सेवा सम्मान पूणे के मिठू जी उर्फ दादा इदाते को ३० जनवरी २००५ को कोलकाता के महाजाति सदन में एक समारोह में प्रदान किया जाएगा। सम्मान स्वरूप श्री इदाते को मानपत्र एवं इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। समारोह में उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल आचार्य श्री विष्णुकांत शास्त्री उपस्थित रहेंगे। ५५ वर्षीय श्री इदाते अनिकेत, अकिंचन, भटके एवं पूर्व जरायम (अपराधी इतिहासवाली) पेशेवर जातियों की सामाजिक समरसता एवं व्यसन मुक्ति के लिए एक समर्पित व्यक्ति हैं।

पुस्तकालय द्वारा १९८७ में स्वामी विवेकानन्द की १२५वीं जयन्ती पर उनके आदर्शों के अनुसार सामाजिक उत्थान के लिए समर्पित व्यक्तियों/संस्थाओं हेतु इस वार्षिक सम्मान का प्रवर्तन किया गया था।

## दिल्ली में परिचय सम्मेलन २७ फरवरी २००५ को

अग्रवाल निदेशिका समिति के तत्वावधान में विवाह योग्य अग्रवाल युवक-युवतियों, विधुर-विधवाओं, परित्यक्ताओं का ४०वां परिचय सम्मेलन २७ फरवरी २००५ को नई दिल्ली में होगा। परिचय सम्मेलन के विवरण-फार्म महामंत्री- अग्रवाल निदेशिका समिति, डी-३६, साउथ एक्सटेंशन- एक, नई दिल्ली- ४९ के कार्यालय में नि:शुल्क उपलब्ध है।

## फैजाबाद : अग्रसेन जयन्ती समारोह सम्पन्न

१०-१४ अक्टूबर। महाराजा अग्रसेन जयन्ती समारोह का आयोजन मारवाड़ी अग्रवाल सभा फैजाबाद द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि श्री विवेक जैन ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री जैन ने धर्मशालाओं, चिकित्सालयों व गौशालाओं की जगह जरूरतमंद बन्धुओं की सहायता परिचय सम्मेलन, सामूहिक विवाह आदि की आवश्यकता बताई। अध्यक्ष श्री भागीरथ पचेरीवाल ने कहा कि महाराजा अग्रसेन से ही समाजवाद की शुरूआत हुई है। आज समाज के लोग सामूहिक विवाह कार्यक्रम में अपने बच्चों का विवाह करने में हिचकते हैं जबकि महाराजा अग्रसेन ने सामूहिक विवाह आयोजित कर अपने बच्चों का विवाह किया था। श्री पचेरीवाल ने २९ जनवरी २००५ को गोरखपुर में सामूहिक विवाह के आयोजन की घोषणा की। मुख्य अतिथि श्री जैन व उद्योगपति श्री लक्ष्मीकान्त झुनझुनवाला ने 'आपणो समाज' स्मारिका का विमोचन किया तथा सभा के अध्यक्ष श्री पचेरीवाल को मारवाड़ी रत्न से सम्मानित किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरष्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री मुरलीधर अग्रवाल थे। सर्वश्री घनश्याम दास बंसल, आनन्द सिंघल, अरविन्द अग्रवाल, अनिल अग्रवाल व सज्जन अग्रवाल का आयोजन की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

## फैजाबाद : महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा का अनावरण

महाराजा अग्रसेन की जयन्ती पर जिलाधिकारी श्री संजय प्रसाद ने महाराजा अग्रसेन चौक (नाका चुंगी) का लोकार्पण एवं अग्रसेन महाराजा की मूर्ति का अनावरण किया। मुख्य अतिथि श्री प्रसाद ने कहा कि महाराजा अग्रसेन वैश्य व मारवाड़ी समाज के

युग प्रवर्तक रहे हैं। उनके राज्य में प्रेम अहिंसा एवं समाज सेवा की भावना सर्वोपरि था।

विशिष्ट अतिथि श्री लक्ष्मीकान्त झुनझुनवाला व नगर पालिका अध्यक्ष श्री विजय गुप्ता ने लोगों से महाराज अग्रसेन द्वारा बताये गये रास्ते का अनुश्रवण करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अन्त में श्री सुन्दरलाल पचेरीवाला ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वेद प्रकाश गुप्ता ने किया।

### नगाँव : महाराजा अग्रसेन जयन्ती का आयोजन सम्पन्न

१७.१०.०४, समाजवाद के प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन जी की जयंती समारोह का आयोजन अग्रवाल सभा, नगाँव के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। समारोह में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल मुख्य अतिथि एवं दिसपुर महाविद्यालय की प्रवक्ता डा. सुनीता अग्रवाल विशिष्ट वक्ता थे। सभा अध्यक्ष श्री संतलाल बंका ने स्वागत भाषण दिया। प्रधान सचिव श्री रघुवीर प्रसाद आलमपुरिया ने प्रतिवेदन पाठ किया। प्रमुख वक्ता श्री विजय कुमार मंगलुनिया, श्री माणकचंद नाहटा, श्री सीताराम अग्रवाल, छापरमुख व श्री बाबुलाल बेरीवाल, होजाई ने महाराजा अग्रसेन के जीवन वृत एवं उनके सिद्धांतों के बारे में जानकारियां दी। कर्मठ समाजसेवी श्री लोकराम डाबड़ीवाल का अभिनंदन किया।

समारोह की मुख्य वक्ता डा. सुनीता अग्रवाल ने कहा कि आजादी के ५७ वर्ष बाद भी हमारी सरकारें समान नागरिक अधिकारों एवं समाजवाद की बातें करती है, परन्तु ५१०० वर्षों पहले महाराजा अग्रसेन के राज्य में कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं था और अगर किसी भाई पर ऐसी विपदा आती तो सभी राज्यवासी मिलकर उसे पुनर्स्थापित कर देते थे। परन्तु आज हम अपनी परम्पराओं से विमुख होते जा रहे हैं। हमें इनके निराकरण हेतु चिन्तन करने की आवश्यकता है।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री ओंकारमल अग्रवाल ने कहा कि मारवाड़ी समाज का हर वर्ग अपने पूर्वजों की जयन्ती आदि मनायें परन्तु अन्य सेवा या सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन सभी वर्गों को एक साथ किसी एक मंच पर मिलकर करना चाहिए जिससे हमारे समाज में एकजुटता एवं पारस्परिक सहयोग की भावना का विस्तार हो, समाज संगठित हो तथा इतर समाज में हमारी साख बढ़े।

समारोह में होजाई, रोहा, छापरमुख आदि क्षेत्रों से लगभग ८०० व्यक्तियों की उपस्थिति हुई। समारोह का संचालन श्री जयकिशन बजाज ने किया। सह सचिव श्री पवन गाड़ोदिया द्वारा धन्यवाद दिया गया।

एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा जानकारी दी गई कि अग्रवाल सभा समस्त मारवाड़ी समाज के लोगों की एक दूरभाष निर्देशिका का प्रकाशन करने जा रही है।

## शोकसभा/श्रद्धांजलि

### सिलीगुड़ी : श्रीमती सरिता सरावगी (शाखाध्यक्षा)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन सिलीगुड़ी शाखा की अध्यक्षा श्रीमती सरिता सरावगी का १.१२.२००४ को ४२ साल की अल्पायु में अकस्मात निधन हो गया। सरिता जी की एक पढ़ी-लिखी, सुशील, मधुरभाषी महिला थीं। उनका इस प्रकार चले जाना सिलीगुड़ी समाज की अपूरणीय क्षति है। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनके परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति दे एवं सरिता जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

### शिवसागर : श्रीमती कमला देवी मोर

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर-शाखा के उपाध्यक्ष श्री फकीरचन्दजी मोर की धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी मोर के ३.१२.०४ को आकस्मिक निधन से शिवसागर नगर के सभी समाज बन्धुओं एवं पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर शाखा के सभी सदस्यों को आन्तरिक दुःख हुआ है। परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की चिरशांति एवं शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय वेदना को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना है।

### शिवसागर शाखा : श्री विशाल खण्डेलवाल

समाज के युवा एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री विशाल खण्डेलवाल सुपुत्र श्री शंकरलाल जी खण्डेलवाल के १९.१०.०४ को हुए आकस्मिक निधन से पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, शिवसागर शाखा के सदस्यगण काफी दुःखी हैं। दिवंगत आत्मा की चिर-शांति हेतु परमपिता परमेश्वर से करबद्ध प्रार्थना करते हैं।

# Leaders

## in construction equipment and infrastructure financing

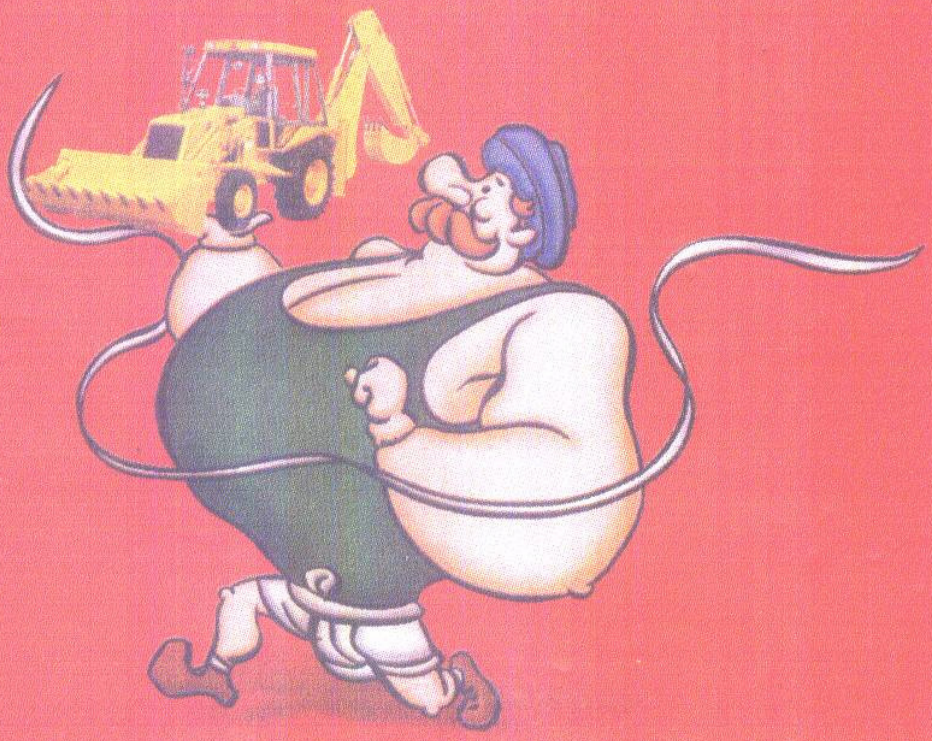

SREI

Srei Infrastructure Finance Limited

'Vishwakarma' 86C, Topsia Road (South), Kolkata-700 046,Tel : +91 33 2285 0112-5/0124-7, Fax : +91 33 22857542/8501,
corporate@srei.com, www.srei.com

SR RUNGTA R GROUP

*Insync with Nature...*

# RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer
(A Pioneer House for Minerals)

- *IRON ORE – BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- *MANGANESE ORE – BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- *LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE*
- *SPONGE IRON – LUMPS & FINES*

*CORPORATE OFFICE*

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

*CENTRAL MINES OFFICE*

BARAJAMDA – 833221, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06596- 262221/262321; Fax: 91-6596-262101;GRAM: "RUNGTA"

*SPONGE IRON DIVISION*

BARBIL – 758035, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 276891; Telefax: 91-6767-276891

From :
**All India Marwari Federation**
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,